St. JOHN
IN
HINDUEE.

मंगलसमाचार यूहन्ना रचित

१ पहिला पर्ब्ब

१ आरंभमें बचनथा और वुह बचन ईश्वरके संगथा और वुह २।३ बचन ईश्वरथा। वही आरंभमें ईश्वरके संगथा। सबकुछ उसे रचागया और उस बिना कुछ नरचागया जो रचागया। ४ उसमें जीवनथा और वुह जीवन मनुष्यनका उंजियालाथा। ५ और वुह उंजियाला अंधियारेमें चमकताहै और अंधियारेने ६ उसे नबूझा। एक मनुष्य ईश्वरके ओरसे भेजागया जिसका ७ नाम यहियाथा। यह साक्षीके लिये आया कि उंजियाले पर साक्षी देवे जिसतें सारे लोग उसके कारणसे बिश्वास लावें। ८ वुह सो उंजियाला नथा परंतु उस उंजियाले पर साक्षी ९ देनेको आयाथा। वुह सत्य उंजियालाथा जो हरएक मनुष्य १० को जो जगतमें आताहै प्रकाशकरताहै। वुह जगतमेंथा और जगत उसे रचागया और जगतने उसको नहीं ११ पहिचाना। वुह अपने निजों पास आया और उसके निजोंने १२ उसे ग्रहण नकिया। परंतु जितनोंने उसे ग्रहण किया उसने उन्हें ईश्वरके पुत्र होनेका मर्जाद दिया उन्होंको जो उसके १३ नाम पर बिश्वास लातेहैं। जो नतो रुधिरसे और नशरीर की इच्छासे और मनुष्यनकी चाहसे परंतु ईश्वरसे उत्पन्नहुए। १४ और बचन मांसहुआ और उसने कृपा और सचाईकी भरपूरीसे हमोंमें बास किया और हमने उसके महिमाको देखा पिताके एकलौतेके महिमाके समान।
१५ यहियाने उसके लिये साक्षी दिई और पुकारके कहा कि यह वुहथा जिसके बिषयमें मैंने कहा कि वुह जो मेरे पीछे आताहै

१६ मुझसे श्रेष्ठहै क्योंकि वुह मुझसे आगेथा। और उसकी भरपूरी
१७ से हमसभोंने पाया और अनुग्रहपर अनुग्रहपाई। क्योंकि
व्यवस्था मूसासे दिईगई अनुग्रह और सच्चाई ईसा मसीहसे
१८ पहुंची। ईश्वरको किसीने कभी नदेखा एकलौते पुत्रने जो
पिताके गोदमेंहै उसे प्रगट किया।
१९ जब यहूदियोंने याजकों और लावियोंको यिरोशलीमसे
भेजा कि उसे पूछें कि तू कौनहै यहियाकी साक्षी यहहै।
२० उसने मानलिया और मुकर नगया परंतु खोलके कहा कि मैं
२१ मसीह नहींहों। और उन्होंने उसे पूछा सो क्या तू इलियास
है उसने कहा कि मैं नहींहों क्या तू वुह आगमज्ञानीहै उसने
२२ उत्तरदिया कि नहीं। तब उन्होंने उसे कहा तू कौनहै
जिसतें हम उनको जिन्होंने हमें भेजा कुछ उत्तर देवें तू अपने
२३ बिषयमें क्या कहताहै। उसने कहा कि मैं एकका शब्द हों
जो बनमें पुकारताहै कि ईश्वरके मार्गको सीधाकरो जैसा
२४ अशैया आगमज्ञानीने कहाहै। और जो भेजेगये सो
२५ फरिसियोंमेंसेथे। और उन्होंने उसको पूछा और कहा
यदि तू मसीह नहीं और इलियास नहीं और नआगमज्ञानी
२६ है फेर तू क्यों स्नानदेताहै। यहियाने उन्हें उत्तर देके कहा
कि मैं जलसे स्नानदेताहों परंतु तुम्हारे मध्यमें एक खड़ाहै
२७ जिसे तुम नहीं जानते। सो वुह है जो मेरे पीछे आताहै जो
२८ मुझसे श्रेष्ठहै मैं जिसकी जूतीका बंद खोलनेके योग्य नहीं। ये
सब अर्दनके उसपार बैतिइबरःमें ऊए जहां यहिया स्नान
२९ देताथा। दूसरे दिन यहियाने ईसाको अपने
ओर आते देखा और कहा कि देखो ईश्वरका मेम्ना जो जगत
३० के पापको लेजाताहै। यह वुहहै जिसके बिषयमें मैंने कहा
कि एक मनुष्य मेरे पीछे आताहै जो मुझसे श्रेष्ठहै इसलिये कि
३१ वुह मुझसे पहिलेथा। और मैं उसे नजानताथा पर इस
लिये मैं जलसे स्नानदेता आया कि वुह इसराईल पर प्रगट

३२ होवे। और यहियाने साक्षी देके कहा कि मैंने आत्माको
कबूतरकी नाईं स्वर्गसे उतरते देखा और वुह उसपर
३३ ठहरगया। और मैं उसे नजानताथा परंतु जिसने मुझे जल
से स्नानदेनेको भेजा उसने मुझे कहा जिसपर तू आत्माको
उतरते और ठहरते देखे वही वुह है जो धर्मात्मासे स्नान
३४ देताहै। और मैंने देखा और साक्षी दिई कि यह ईश्वरका
३५ पुत्रहै। फेर दूसरे दिन यहिया और दो उसके
३६ शिष्योंमेंसे खड़ेथे और ईसा को गमनकरते देखके उसने कहा
३७ देखो ईश्वरका मेम्ना। और दोनो शिष्यनने उसका बचन
३८ सुना और वे ईसाके पीछे होलिये। तब ईसाने पीछे फिरके
उन्हें आते देखके कहा कि तुम क्या ढूंढतेहो उन्होंने उसे कहा
३९ हे रब्बी अर्थात हे गुरु तू कहां रहताहै। उसने कहा आओ
देखो और जहां वुह रहताथा उन्होंने आके देखा और उस
४० दिन उसके संग रहे वुह दसवें घंटेके अंटकलथा। एक उन
दोमेंसे जो यहियाका बचन सुनकर उसके पीछे गये शमऊन
४१ पतरसका भाई अंद्रयासथा। उसने पहिले अपने भाई
शमऊनको पाया और उसे कहा कि हमने मसीहको पाया
४२ जिसका अर्थहै अभिषेक कियागया। तब वुह उसे ईसा पास
लाया और ईसाने उसपर दृष्टि करके कहा तू यूनसका पुत्र
शमऊन है तू किफास कहावेगा जिसका अर्थ पत्थरहै।
४३ अगिले दिन ईसाने चाहा कि जलीलमें जाय और
४४ फैलबूसको पाके कहा मेरे पीछेहोले। अब फैलबूस अंद्रयास
४५ और पतरसके नगर बैतिसैदाकाथा। फैलबूसने नासानाईल
को पाया और उसे कहा कि हमने उसको पाया जिसके
विषयमें मूसाने ब्यवस्थामें और आगमज्ञानियोंने लिखाहै
४६ यूसफ का पुत्र ईसा नासरी। नासानाईलने उसे कहा क्या
कोई अच्छी बस्तु नासरःसे निकलसक्तीहै फैलबूसने उसे कहा
४७ कि आ और देख। ईसाने नासानाईलको अपने और आते

देखा और उसके बिषयमें कहा कि देखो एक सच्चा इसराईली
४८ जिसमें कपट नहीं। नासानाईलने उसे कहा तू मुझे कहांसे
जानताहै ईसाने उत्तर देके उसे कहा फीलबूसके तुझे बुलानेसे
४९ आगे जब तू गूलरके वृक्षके तलेथा मैंने तुझे देखा। नासानाईल
ने उत्तर देके उसे कहा हे गुरु तू ईश्वरका पुत्रहै तू
५० इसराईलका राजाहै। ईसाने उत्तर देके उसे कहा क्या
इसलिये तू बिश्वास लाताहै कि मैंने तुझे कहा कि गूलरके
५१ वृक्षके तले मैंने तुझे देखा तू इन्होंसे बड़े कार्य देखेगा। फेर
उसने उसे कहा मैं तुम्होंसे सत्य सत्य कहताहों कि इसके
पीछे तुम स्वर्गको खुला और ईश्वरके दूतोंको ऊपर जाते
और मनुष्यके पुत्र पर उतरते देखोगे।

२ दूसरा पर्व्व

१ और तीसरे दिन जलीलके कानामें किसीका बिवाहथा और
२ ईसाकी माता वहींथी। ईसा और उसके शिष्यभी उस
३ बिवाहमें बुलायेगयेथे। और जब दाखका रस थोड़ा रहा
ईसाकी माताने उसे कहा कि उनके पास दाखका रस नहींहै।
४ ईसाने उसे कहा हे स्त्री तुझे मुझे क्या काम मेरा समय अबलों
५ नहीं आया। उसकी माताने सेवकोंसे कहा जोकुछ वुह तुम्हें
६ कहे उसे कीजियो। और वहां पत्थरके छः मटके यहूदियोंके
पवित्र करनेकी रीतिके समान धरेथे हरएकमें दो अथवा
७ तीन मनकी समाईथी। ईसाने उन्हें कहा कि मटकोंमें जल
८ भरो सो उन्होंने उनको मुंहमुंह भरा। फेर उसने उन्हें
कहा अब निकालो और जेवनारके प्रधान पास लेजाओ सो
९ वे लेगये। जब जेवनारके प्रधानने उस जलको चीखा जो
दाखका रस बनाथा और नजाना कि वुह कहांसेथा परंतु
सेवक जिन्होंने जलको निकालाथा जानतेथे उसने दूल्हाको
१० बुलाया। और उसे कहा कि हरएक मनुष्य पहिले अच्छा

दाखका रस देतेहैं और जब लोग पीके छकतेहैं तब वुह जो उस्से घटतीहै पर तूने अच्छा दाखका रस अबलों रखछोड़ाहै।
११ यह आश्चर्यांका आरंभ ईसाने जलीलके कानामें किया और अपना महिमा प्रगटकिया और उसके शिष्य उसपर बिश्वास
१२ लाये। इसके पिछे वुह और उसकी माता और भाई और उसके शिष्य कपरनाहममें गये और वे वहां बहुत
१३ दिन नठहरे। तब यहूदियोंके बीतजानेका पर्ब्ब
१४ समीप आया और ईसा यिरोशलीमको गया। और मंदिर में बैलों और भेड़ों और कबूतरोंके बैपारियों और खुरदियों
१५ को बैठे पाया। तब उसने पतली रस्सीका चाबुक बनाके उन सभोंको बैलों और भेड़ों समेत मंदिरसे बाहर निकालदिया और खुरदियोंके रोकड़को बिथरादिया और मंचोंको उलट
१६ दिया। और कबूतरोंके बैपारियोंको कहा इन बस्तुनको यहांसे दूरकरो मेरे पिताके घरको ब्यापारका घर मत
१७ बनाओ। और उसके शिष्यनने चेत किया कि यह लिखाथा
१८ कि तेरे घरका ताप मुझे खागया। तब यहूदियोंने उत्तरदिया और उसे कहा तू हमें कौनसा लक्षण दिखावताहै
१९ जो यह कार्य करताहै। ईसाने उत्तरदिया और उन्हें कहा कि इस मंदिरको ढादो और तीन दिनमें मैं इसे उठाओं।
२० तब यहूदियोंने कहा कि इस मंदिरके बननेमें छियालीस
२१ बरस लगे और तू उसे तीन दिनमें उठावेगा। परंतु उसने
२२ अपने देहके मंदिरके बिषयमें कहा। इसलिये जब वुह मृतकोंमेंसे जीउठा उसके शिष्योंने चेतकिया कि उसने उन्हें यह कहाथा और वे ग्रंथोंपर और उस बचनपर जो ईसा
२३ ने कहाथा बिश्वास लाये। और जब वुह बीतजानेके पर्ब्बमें यिरोशलीममें था बहुतेरोंने उसके आश्चर्य कार्यको
२४ देखके उसपर बिश्वास लाये। परंतु ईसाने अपनेको उनपर
२५ नछोड़ा क्योंकि वुह सबको पहिचानताथा। और आवश्यक

नरखताथा कि कोई मनुष्यनकी अवस्थामें साक्षीदे क्योंकि वुह जानताथा कि मनुष्यनमें क्याथा।

३ तीसरा पर्ब्ब

१ फरीसियोंमेंसे एक मनुष्य जिसका नाम नीकूदीमूसथा जो
२ यहूदियोंका एक प्रधानथा। रातको ईसाके पास आया और उसे कहा हे गुरु हम जानतेहैं कि तू ईश्वरके ओरसे उपदेशक होके आया क्योंकि कोई मनुष्य यह आश्चर्य जो तू करताहै नहीं करसक्ता जबलों ईश्वर उसके संग नहो।
३ ईसाने उत्तर दिया और उसे कहा मैं तुझे सत्य सत्य कहताहों जबलों मनुष्य फेरके उत्पन्न नहोवे वुह ईश्वरके राज्यको
४ देख नहींसक्ता। नीकूदीमूसने उसे कहा कि मनुष्य जब वृद्ध होगया तो वुह क्योंकर उत्पन्न होसक्ताहै क्या वुह दूसरी बार अपनी माताके गर्भमें प्रवेश करके उत्पन्न होसक्ताहै।
५ ईसाने उत्तरदिया कि मैं तुझे सत्य सत्य कहताहों यदि मनुष्य जल और आत्मासे उत्पन्न नहोवे तो वुह ईश्वरके राज्यमें
६ प्रवेश नहीं करसक्ता। जो मांससे उत्पन्नहुआहै मांसहै और
७ जो आत्मासे उत्पन्नहुआहै आत्माहै आश्चर्य मतकर कि मैंने
८ तुझे कहा कि तुम्हें फेरके उत्पन्न होना अवश्यहै। पवन जिधर चाहताहै चलताहै और तू उसका शब्द सुनताहै परंतु नहीं जानता कि वुह कहांसे आताहै और किधरको जाताहै ऐसाही हरएकहै जो आत्मासे उत्पन्नहुआहै।
९ नीकूदीमूसने उत्तरदिया और उसे कहा ये बातें क्योंकर
१० होसक्तीहैं। ईसाने उत्तरदिया और उसे कहा कि तू
११ इसराईलका उपदेशकहै और ये बातें नहीं जानता। मैं तुझे सत्य सत्य कहताहों जिसे हम जानतेहैं हम कहतेहैं और जिसे हमने देखाहै उसपर साक्षी देतेहैं परंतु तुम
१२ हमारी साक्षी नहीं मानते। यदि मैंने तुम्हें भूमिकी बातें कहीं

और तुम प्रतीति नहीं करते तो यदि मैं तुम्हें स्वर्गकी बातें
१३ कहूं तुम क्योंकर प्रतीति करोगे। और कोई मनुष्य स्वर्गपर
नहीं गया परंतु केवल वुह जो स्वर्गसे उतरा अर्थात मनुष्यका
१४ पुत्र जो स्वर्गमेंहै। और जिसरीतिसे मूसाने बनमें
सर्पको ऊपर उठाया उसीरीतिसे अवश्यहै कि मनुष्यका पुत्र
१५ भी उठायाजाय। कि जोकोई उसपर बिश्वास लावे नाश
१६ नहोवे परंतु अनंतजीवन पावे। क्योंकि ईश्वरने
जगतपर ऐसा प्रेम कियाहै कि उसने अपना एकलौता पुत्र
दानकिया कि जो कोई उसपर बिश्वास लावे नाश नहोवे
१७ परंतु अनंतजीवन पावे। क्योंकि ईश्वरने अपने पुत्रको जगत
में इसलिये नहीं भेजा कि जगतको दोषी करे परंतु इसलिये
१८ कि जगत उसके कारण उद्धार पावे। वुह जो उस
पर बिश्वास रखताहै दोषी नहीं परंतु वुह जो बिश्वास नहीं
रखता दोषी होचुका इसलिये कि वुह ईश्वरके एकलौते
१९ पुत्रके नाम पर बिश्वास नलाया। और दोष यहीहै कि
उंजियाला जगतमें आया और मनुष्यनने अंधकारको
उंजियालेसे अधिक प्यारकिया क्योंकि उनके कार्य बुरेथे।
२० क्योंकि जोकोई बुरा करताहै उंजियालेसे बैर रखताहै और
उंजियालेलों नहीं आता नहो कि उसके कार्य प्रगट होवें।
२१ परंतु वुह जो सत्य करताहै उंजियालेके पास आताहै कि
उसके कार्य प्रगट होवें कि वे ईश्वरमें कियेगयेहैं।
२२ इन बस्तुनके पिछे ईसा और उसके शिष्य यहूदियःकी भूमि
में आये और उसने वहां उनके संग कुछदिन ठहरके स्नान
२३ दिया। और यहियाभी सालीमके समीप ऐनूनमें स्नान
देताथा क्योंकि वहां बहुत जलथा और लोग आके स्नान
२४ पायाकिये। क्योंकि यहिया अबलों बंदीगृहमें डाला नगयाथा।
२५ तब यहियाके शिष्यनमें और यहूदियोंमें पवित्र
२६ करनेके बिषयमें चर्चाहुई। और वे यहियाके पास आये और

उसे बोले कि गुरुजी वुह जो अर्दनके पार तेरे संगथा जिसपर तूने साक्षीदिई देख कि वुह स्नानदेताहै और सब उसके पास
२७ आतेहैं। यहियाने उत्तरदेके कहा कि मनुष्य कुछ पानहीं
२८ सक्ता केवल वुह उसे स्वर्गसे दियाजाय। तुम आपही साक्षी देतेहो कि मैंने कहा कि मैं मसीह नहीं परंतु मैं उसके आगे
२९ भेजागयाहों। जिसकी दुल्हिनहै वुह दूल्हाहै परंतु दूल्हाका मित्र जो खड़ाहोके उसको सुनताहै दूल्हाके शब्दसे बड़ा आनंद
३० होताहै इसकारण मेरा यह आनंद संपूर्णहुआ। अवश्यहै
३१ कि वुह बढ़े और मैं घटों। वुह जो ऊपरसे आताहै सबसे बड़ाहै वुह जो पृथिवीकाहै पार्थिवहै और पृथिवीकी
३२ कहताहै वुह जो स्वर्गसे आताहै सबसे बड़ाहै। और जोकुछ उसने देखा और सुनाहै वुह उसीकी साक्षी देताहै और
३३ कोई मनुष्य उसकी साक्षी ग्रहण नहीं करता। जिसने उसकी साक्षी ग्रहण किईहै वुह छाप कियाहै कि ईश्वर सत्यहै।
३४ इसलिये कि जिसे ईश्वरने भेजाहै वुह ईश्वरकी बातें कहताहै
३५ क्योंकि ईश्वर आत्मा परिमाणसे नहीं देता। पिता पुत्रको
३६ प्यार करताहै और समस्त बस्तें उसके हाथमें दिईहैं। जो कि पुत्र पर बिश्वास लाताहै अनंतजीवन रखताहै और वुह जो पुत्र पर बिश्वास नहीं लाता जीवनको नदेखेगा परंतु ईश्वरका क्रोध उसपर रहताहै।

४ चौथा पर्व्व

१ इसलिये जब प्रभुने जाना कि फरीसियोंने सुना कि ईसाने
२ यहियासे अधिक शिष्य किया और स्नानदिया। यद्यपि ईसा
३ नहीं परंतु उसके शिष्य स्नानदेतेथे। तब वुह यहूदियःको
४ छोड़ जलीलको फिरगया। और अवश्यथा कि वुह सामरः
५ में होके जाय। सामरःके एक नगरमें जो सैकर कहावताहै उस भूमिके पास जो याक़ूबने अपने पुत्र यूसफको दिईथी

६ वुह आया। और याकूबका कूआं वहींथा सो ईसा यात्रासे
थकाहोके उस कूए पर योंही बैठगया यह दो पहरके
७ निकटथा। सामरःकी एक स्त्री पानी भरनेको आई और
८ ईसाने उसे कहा कि मुझे पीनेको दे। क्योंकि उसके शिष्य
९ नगरमें गयेथे कि कुछ भोजन मोल लेवें तब सामरःकी उस
स्त्रीने उसे कहा कि तू यहूदी होके क्योंकर मुझसे जो सामरः
की स्त्रीहों पीनेको मांगताहै क्योंकि यहूदी सामरियोंसे
१० बवहार नहीं रखते। ईसाने उत्तरदेके उसे कहा यदि तू
ईश्वरके दानको जानती और उसको जो तुझे कहताहै कि
मुझे पीनेको दे तू उस्से मांगती और वुह तुझे अमृत जल
११ देता। स्त्रीने उसे कहा महाशय तेरे पास खैंचनेको कुछ नहीं
और कूंआ गहिराहै फेर तूने वुह अमृत जल कहांसे पाया।
१२ क्या तू हमारे पिता याकूबसे बड़ाहै जिसने हमें यह कूंआ
दिया और उसने आप और उसके बालकोंने और उसके
१३ पशुनने उस्से पीया। ईसाने उत्तरदिया और उसे कहा जो
१४ कोई यह जल पीताहै फेर प्यासा होगा। परंतु जोकोई
वुह जल पीताहै जो मैं उसे देउं कधी प्यासा नहोगा परंतु
वुह जल जो मैं उसे देउंगा उसमें जलका सोता होजायगा
१५ जो अनंत जीवनलों बहतारहेगा। स्त्रीने उसे कहा कि हे
प्रभु यह जल मुझे दे कि मैं प्यासी नहों और यहां भरनेको
१६ नआओं। ईसाने उसे कहा कि जा अपने पतिको बुला और
१७ इधर आ। स्त्रीने उत्तरदिया और कहा कि मेरा पति नहींहै
ईसाने उसे कहा तूने अच्छा कहा कि मेरा पति नहींहै।
१८ इसलिये कि तू पांच पति करचुकी और वुह जो तू अब
१९ रखतीहै तेरा पति नहीं तूने उसमें सत्य कहा। स्त्रीने उसे
कहा कि हे महाशय मुझे सूझपड़ताहै कि तू आगमज्ञानीहै।
२० हमारे पितरोंने इस पहाड़में सेवा किई और तुम कहतेहो
कि वुह स्थान यिरोशलीममें है जहां उचितहै कि लोग सेवा

२१ करें। ईसाने उसे कहा कि हे स्त्री मेरी बात प्रतीतिकर
कि वुह समय आताहै कि अब तुमलोग न इस पहाड़में और
२२ न यिरोशलीममें पिताकी सेवाकरोगे। जिसे तुम नहीं जानते
उसकी सेवा करतेहो हम जिसे जानतेहैं उसकी सेवा करतेहैं
२३ इसलिये कि उद्धार यहूदियोंसेहै। परंतु समय आताहै
और अबहै कि सच्चे पूजेरी आत्मासे और सचाईसे पिताकी
२४ सेवाकरेंगे क्योंकि पिता ऐसे सेवकोंको ढूंढ़ताहै। ईश्वर
आत्माहै और वे जो उसकी सेवा करतेहैं अवश्यहै कि
२५ आत्मासे और सचाईसे सेवाकरें। स्त्रीने उसे कहा मैं
जानतीहों कि मसीह आताहै जो अभिषेक कहावताहै जब
२६ वुह पहुंचेगा वुह हमें सबकुछ कहेगा। ईसाने उसे कहा मैं
२७ जो तुझे कहताहों वहीहों। और इतनेमें उसके
शिष्य आये और आश्चर्य किये कि वुह स्त्रीसे बार्त्ता करताथा
परंतु किसीने नकहा कि तू क्या मांगताहै अथवा उस्से किस
२८ लिये बार्त्ता करताहै। तब स्त्रीने अपने जलका घड़ा छोड़ा
२९ और नगरमें जाके लोगोंसे कहा। आओ एक मनुष्यको देखो
जिसने सब कार्य जो मैंने किये मुझे कहा क्या यह वुह मसीह
३० नहीं। तब वे नगरसे निकलके उसके पास आये।
३१ इतनेमें उसके शिष्यनने उसको बिनती करके कहा कि
३२ हे गुरु कुछ खाइये। परंतु उसने उन्हें कहा मेरे पास
३३ भोजन खानेकोहै जिसे तुम नहीं जानते। इसलिये शिष्यनने
आपुसमें कहा क्या कोई मनुष्य उसके लिये भोजन लायाहै।
३४ ईसाने उन्हें कहा मेरा भोजन यहहै कि जिसने मुझे भेजा
उसकी इच्छा पर चलों और उसके कार्यको संपूर्ण करों।
३५ तुम क्या नहीं कहतेहो कि चार महीनेके पीछे लवनेका समय
आवेगा देखो मैं तुम्होंसे कहताहों अपनी आंखे ऊपर करो
३६ और खेतोंको देखो कि वे लवनेके लिये पकचुकेहैं। और वुह
जो लवताहै बनी पाताहै और अनंतजिवनके लिये फल एकट्ठे

करताहै कि वुह जो बोताहै और वुह जो लवताहै मिलके
३७ आनंद करें। और उसपर यह वचन सत्यहै कि एक बोताहै
३८ और दूसरा लवताहै। मैंने तुम्हें उसे लवनेको भेजाहै जिसमें
तुमने परिश्रम नकिया औरोंने परिश्रम किया और तुम्होंने
३९ उनके परिश्रममें प्रवेशकिया। और उस नगरके
बक्तसे सामरी उस स्त्रीके कहनेसे उसपर बिश्वास लाये
जिसने साक्षी दिई कि जो कुछ मैंने कभी किया उसने मुझे
४० कहा। और उन सामरियोंने उसके पास आके उसको
बिनती किई कि हमारे संग रह सो वुह दो दिन वहां रहा।
४१ उनसे अधिक और बक्तेरे उसीके बचनके कारण बिश्वास
४२ लाये। और उस स्त्रीको कहा कि अब हम केवल तेरे कहेसे
बिश्वास नहीं लाते क्योंकि हमने आपही सुना और जानतेहैं
कि यह ठीक जगतका मुक्तिदाता मसीहहै।
४३ और वुह दो दिनके पीछे वहांसे सिधारके जलीलको गया।
४४ क्योंकि ईसाने साक्षी दिई कि आगमज्ञानी अपने देशमें आदर
४५ नहीं पाता। और जब वुह जलीलमें आया जलीलियोंने उसे
ग्रहणकिया कि उन्होंने सबकुछ जो उसने यिरोशलीमके बीच
४६ पर्व्वमें किया देखाथा क्योंकि वेभी पर्व्वमें गयेथे। और ईसा
फेर जलीलके कानामें आया जहां उसने जलको दाखका रस
बनायाथा और वहां एक प्रतिष्ठित मनुष्यथा जिसका पुत्र
४७ कपरनाहूममें रोगीथा। जब उसने सुना कि ईसा यहूदियः
से जलीलमें आया वुह उसके पास गया और उसको बिनती
किई कि वुह आके उसके पुत्रको चंगाकरे क्योंकि वुह मरने
४८ परथा। तब ईसाने उसे कहा जबलों तुम लक्षण और
४९ आश्चर्य नदेखो तुम बिश्वास नलाओगे। उस प्रतिष्ठित
मनुष्यने उसे कहा हे महाशय मेरे लड़केके मरनेके आगे
५० उतर आइये। ईसाने उसे कहा जा तेरा पुत्र जीवताहै
और उस मनुष्यने उस बचनपर जो ईसाने उसे कहाथा

५१ निश्चय किया और चलागया। वुह उतरताहीथा कि उसके सेवक उसे मिले और उसे कहा कि तेरा बेटा जीवताहै।
५२ तब उसने उन्हें पूछा कि वुह किस घड़ीसे चंगा होनेलगा
५३ उन्होंने उसे कहा कल सातवीं घड़ीसे ज्वरने उसे छोड़ा। तब उसके पिताने जाना कि उसी घड़ीमें ईसाने उसको कहाथा कि तेरा बेटा जीवताहै तब वुह आप और उसका साराघर
५४ बिश्वास लाया। यह फेर दूसरा आश्चर्यहै जो ईसाने यहूदियःसे आके जलीलमें किया।

५ पांचवां पर्ब्ब

१ इसके पीछे यहूदियोंका एक पर्ब्ब आया और ईसा ऊपर
२ यिरोशलीमको गया। अब यिरोशलीममें भेड़ोंकी हाटके पास एक कुंडहै जिसके पांच घाटहैं जो इबरी भाषामें
३ बैतिहसदा कहावताहै। उनमें दुर्बल अंधे लंगड़े और लूलों की एक बड़ी मंडली पड़ीथी जो जलके डोलनेकी आशामेंथी।
४ क्योंकि एक दूत किसी समयमें उस कुंडमें उतरके जलको डोलावताथा और जलके डोलनेके पीछे जोकोई पहिले उसमें
५ उतरताथा जिस्से वुह रोगीथा उससे चंगाहोताथा। और
६ वहां एक मनुष्यथा जो अठतीस बरससे रोगीथा। ईसाने उसे पड़ेहुए देखा और जाना कि वुह बहुत दिनसे उस
७ दशामेंहै तो उसे कहा कि तू चंगाहोने चाहताहै। उस दुर्बल मनुष्यने उसे उत्तरदिया कि हे प्रभु मेरे पास कोई मनुष्य नहीं कि जब यह जल डोले तो मुझे कुंडमें डालदे और जबलों मैं आताहों दूसरा मुझसे आगे उतरपड़ताहै।
८ ईसाने उसे कहा उठ और अपना बिछौना उठा और
९ चलाजा। और तुरंत वुह मनुष्य चंगाहोगया और अपना बिछौना उठाके चलनिकला और वुह बिश्रामका दिनथा।
१० इसलिये यहूदियोंने उस चंगे किएगये मनुष्यको

कहा कि यह बिश्रामका दिनहै तुझे योग्य नहीं कि बिछौना
११ उठावे। उसने उन्हें उत्तर दिया कि जिसने मुझे चंगाकिया
१२ उसीने मुझे कहा कि अपना बिछौना उठाके चलाजा। तब
उन्होंने उसको पूछा कि वुह कौन मनुष्यहै जिसने तुझे कहा
१३ कि अपना बिछौना उठाके चलाजा। अब उसने जो चंगा
हुआथा नजाना कि वुह कौनथा क्योंकि उस स्थानमें एक भीड़
१४ थी और ईसा वहांसे हटगयाथा। इसके पीछे ईसाने उसे
मंदिरमें पाया और उसे कहा देख तू चंगाकियागया फेर
१५ पाप नकरना नहोवे कि तू अधिक बिपत्तिमें पड़े। उस मनुष्य
ने जाके यहूदियोंसे कहा कि जिसने मुझे चंगाकिया ईसाथा।
१६ इसलिये यहूदियोंने ईसाको सताया और मारडालनेको
उसके पीछेपड़े क्योंकि उसने ये कार्य बिश्रामके दिनमें किये।
१७ परंतु ईसाने उन्हें उत्तर दिया कि मेरा पिता
१८ अबलों कार्य करताहै और मैंभी करताहों। और यहूदियों
ने उसे मारडालनेको अधिक चाहा क्योंकि उसने केवल
बिश्रामके दिनको उलंघन नकिया परंतु ईश्वरको अपना
१९ पिता कहिके अपनेको ईश्वरके सम किया। तब ईसाने उत्तर
दिया और उन्हें कहा मैं तुम्होंसे सत्य सत्य कहताहों कि पुत्र
आपसे कुछ नहीं करसक्ता परंतु जो कुछ कि वुह पिताको
करते देखताहै क्योंकि जो कार्य कि वुह करताहै पुत्रभी उसी
२० रीतिसे वही करताहै। क्योंकि पिता पुत्रको प्यारकरताहै
और जो कार्य कि आप करताहै उसे दिखावताहै और वुह
उसको इनसेभी बड़ा कार्य दिखावेगा कि तुम आश्चर्य मानो।
२१ इसलिये कि जिस रीतिसे पिता मृतकोंको उठाताहै और
२२ जिलाताहै पुत्रभी जिन्हें चाहेगा जिलावेगा। क्योंकि पिता
किसी मनुष्यका बिचार नहीं करता परंतु उसने सब बिचार
२३ पुत्रको सौंपदिया। कि सब जिस रीतिसे पिताका आदर
करतेहैं पुत्रकाभी आदरकरें वुह जो पुत्रका आदर नहीं

करता पिताका जिसने उसे भेजाहै आदर नहीं करता।
२४ मैं तुम्हांसे सत्य सत्य कहताहों कि जोकोई मेरा बचन सुनताहै
और जिसने मुझे भेजाहै उसपर बिश्वास लाताहै अनंत
जीवन रखताहै और दोषमें नपड़ेगा परंतु मृत्युसे छूटके
२५ जीवनको पडुंचाहै। मैं तुम्हांसे सत्य सत्य कहताहों कि समय
आताहै और अबहै कि मृतक ईश्वरके पुत्रका शब्द सुनेंगे
२६ और सुनके जीयेंगे। इसलिये कि जिस रीतिसे पिता आपमें
जीवन रखताहै इसी रीतिसे उसने पुत्रको दिया कि आपमें
२७ जीवन रखे। और उसको पराक्रम दियाहै कि बिचारकरे
२८ इसलिये कि वुह मनुष्यका पुत्रहै। इस्से आश्चर्य मत मानो
क्योंकि वुह समय आताहै जिसमें सब जो समाधिनमेंहैं
२९ उसका शब्द सुनेंगे। और निकल आवेंगे जिन्होंने भलाई
किईहै जीवनके लिये जीउठेंगे और जिन्होंने बुराई किईहै
३० दंडके लिये जीउठेंगे। मैं आपसे कुछ नहीं करसक्ता जैसा मैं
सुनताहों आज्ञा करताहों और मेरी आज्ञा ठीकहै क्योंकि
मैं अपनी इच्छा नहीं ढूंढता परंतु पिताकी इच्छा जिसने मुझे
३१ भेजाहै। यदि मैं अपने पर साक्षी देउं तो मेरी साक्षी सत्य
३२ नहीं। दूसराहै जो मुझपर साक्षी देताहै और
मैं जानताहों कि साक्षी जो वुह मेरे लिये देताहै सत्यहै।
३३ तुम्होंने यहियाके पास भेजा और उसने सचाईपर साक्षी दिई।
३४ और मैं मनुष्यकी साक्षी नहीं चाहता पर मैं ये बातें कहताहों
३५ कि तुम बचजाओ। वुह जलता और चमकता उंजियालाथा
और तुम थोड़े दिनलों चाहतेथे कि उसके उंजियालेमें आनंद
३६ करो। परंतु मुझ पास यहियाकी साक्षीसे एक
बड़ीहै इसलिये कि ये कार्य जो पिताने मुझे संपूर्ण करनेको
दियाहै वही कार्य जो मैं करताहों मेरे लिये साक्षी देतेहैं कि
३७ पिताने मुझे भेजाहै। और पिताने जिसने मुझे भेजाहै मेरे
लिये आप साक्षी दिईहै तुम्होंने कभी उसका शब्द नसुना

३८ और न उसका स्वरूप देखा। और उसका बचन तुम्हों में वास नहीं करता इसलिये कि जिसको उसने भेजा तुम उसका
३९ बिश्वास नहीं करते। पुस्तकोंमें ढूंढो क्योंकि तुम समुझते हो कि उनमें तुम्हारे लिये अनंत जीवन है और येही व
४० जो मुझपर साक्षी देती हैं। और तुम नहीं चाहते कि मुझ
४१ पास आओ कि जीवन पाओ। मैं मनुष्यनसे महिमा नहीं
४२ ग्रहणकरता। परंतु मैं तुम्हें जानताहों कि ईश्वरकी प्रीति
४३ तुम्हों में नहींहै। मैं अपने पिताके नामसे आयाहों और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते यदि दूसरा अपने नामसे आवे तुम
४४ उसे ग्रहण करोगे। तुम जो आपुसमें एक दूसरेकी प्रतिष्ठा ग्रहणकरतेहो और वुह प्रतिष्ठा जो केवल ईश्वरसेहै नहीं
४५ ढूंढते क्योंकर बिश्वास लासक्ते। मत समझो कि मैं पिताके पास तुम्हें दोष देउंगा एकहै मूसा जिसपर तुम भरोसा
४६ रखतेहो तुम्हारा दोषदायकहै। क्योंकि यदि तुम मूसाके बिश्वासी होते तुम मेरे बिश्वासी होते इसलिये कि उसने मेरी
४७ अवस्थामें लिखा। परंतु यदि तुम उसके लिखेके बिश्वासी नहीं तो तुम मेरे बचन पर कैसे बिश्वास लाओगे।

६ छठवां पर्व्व

१ इन बातोंके पीछे ईसा तिबिरियासके जलीलके समुद्र पार
२ गया। और एक बड़ी मंडली उसके पीछे होलिई इस कारण कि उन्होंने उसके आश्चर्योंको देखा जो उसने रोगियों
३ पर कियाथा। फेर ईसा पहाड़ पर जाके अपने शिष्यनके संग बैठा और बीतजाना जो यहूदियोंका पर्व्वहै समीपथा।
५ फेर जब ईसाने आंखें ऊपर किईं और देखा कि
४ बड़ा जथा उसके पास आताहै उसने फीलबूसको कहा कि
६ हम कहांसे रोटी मोललें कि ये खावें। परंतु उसने यह उसके जांचनेके कारण कहाथा क्योंकि वुह आप जानताथा

७ क्या कियाचाहताथा। फैलबूसने उसे उत्तरदिया कि उनमेंसे हरएकको एकोएक टुकड़ा देते चलेजायं तथापि उनके लिये
८ दोसौ चरन्नोकी रोटी बस नहोंगी। उसके शिष्यनमेंसे एकने
९ जो शमऊन पतरसका भाई अंद्रयासथा उसको कहा। कि यहां एक छोकराहै जिसके पास जवकी पांच रोटीयां और
१० दो मछलियांहैं परंतु ये इतनोंमें क्याहैं। ईसाने कहा कि लोगोंको बैठाओ अब उस स्थानमें बऊत घासथी सो वे लोग
११ जो गिनतीमें पांच सहस्रके प्रमाणथे बैठगये। और ईसाने रोटियोंको लिया और स्तुति करके शिष्यनको दिया और शिष्यनने उन्हें जो बैठेथे बांटा और उसीरीतिसे मछलियोंसे
१२ भी जितना वे चाहतेथे। जब वे संतुष्टऊए उसने अपने शिष्यन को कहा कि चूरचार जो बचरहेहैं एकट्ठे करो कि कुछ
१३ खोनजावे। सो उन्होंने एकट्ठेकिये और जवकी पांच रोटियों के चूरचारसे जो उन भोजनहारियोंसे बंचरहेथे बारह
१४ टोकरियां भरीं। तब उन लोगोंने यह आश्चर्य जो ईसाने किया देखके कहा कि सचमुच यह वही आगमज्ञानीहै जो
१५ जगतमें आनेकोथा। और ईसाने जाना कि वे चाहतेहैं कि आवें और उसे बरबस पकड़के राजा करें आप
१६ अकेला पहाड़को फिरगया। और जब सांझऊई उसके शिष्य
१७ समुद्र पर गये। और नाव पर चढ़के समुद्रके पार कफरनाहूमको चले उस समय अंधियारा होचलाथा और
१८ ईसा उनके पास नआयाथा। और बड़ी बयारके बहनेके
१९ कारणसे समुद्र डोलेलगा। जब वे पचीस अथवा तीस नलके खेचुके उन्होंने ईसाको समुद्र पर चलते और नावके पास
२० आते देखा और डरगये। तब ईसाने उन्हें कहा कि मैं हों
२१ भय मतकरो। फिर उन्होंने आनंद होके उसको नाव पर लेलीया और तुरंत नाव तीर पर जिधर वे जातेथे जापऊंची।
२२ दूसरे दिन जब लोगोंने जो समुद्रके पार खड़ेथे

देखा कि वहां कोई दूसरी नाव नथी केवल वुह एक जिसपर उसके शिष्य चढ़ेथे और कि ईसा अपने शिष्यनके संग उस नाव पर नगयाथा परंतु केवल उसके शिष्य चलेगयेथे।
२३ तिसपरभी और नावें तोबारयाससे उस स्थानके पास जहां
२४ उन्होंने प्रभुके धन्यमाननेके पीछे रोटी खाईथी आईं। सो लोगोंने देखा कि ईसा वहां नथा नउसके शिष्य वेभी नाव
२५ पर चढ़े और ईसाको ढूंढ़ते कपरनाऊममें आये। और उन्होंने उसको समुद्रके पार पाके उसे कहा कि गुरुजी आप
२६ यहां कब आये। ईसाने उन्हें उत्तरदिया और कहा कि मैं तुम्होंसे सत्य सत्य कहताहों तुम मुझे इसलिये नहीं ढूंढ़ते कि तुम्होंने आश्चर्य कर्म देखा परंतु इसलिये कि तुम रोटियोंको
२७ खाके तृप्तहुये। नाशमान भोजनके लिये परिश्रम मतकरो परंतु उस भोजनका खोजकरो जो अनंत जीवनलों ठहरताहै जिसे मनुष्यका पुत्र तुम्हें देगा क्योंकि पिताने जो ईश्वरहै
२८ उसपर छाप कियाहै। तब उन्होंने उसे कहा कि हम क्या
२९ करें जिसतें हम ईश्वरके कार्यकारीहों। ईसाने उत्तरदिया और उन्हें कहा ईश्वरका कार्य यहहै कि तुम उसपर जिसे
३० उसने भेजाहै बिश्वास लाओ। तब उन्होंने उसे कहा फेर तू कौनसा चिह्न दिखावताहै कि हम देखें और तुझपर बिश्वास
३१ लावें तू क्या कार्य करताहै। हमारे पितरोंने बनमें मन्न खाया जैसा कि लिखाहै उसने उन्हें स्वर्गसे रोटी खानेको
३२ दिई। तब ईसाने उन्हें कहा मैं तुम्होंसे सत्य सत्य कहताहों मूसाने तुम्हें स्वर्गसे वुह रोटी नहीं दिई परंतु मेरा पिता
३३ तुम्हें स्वर्गसे सच्ची रोटी देताहै। इसलिये कि ईश्वरकी रोटी वुहहै जो स्वर्गसे उतरती और जगतको जीवन देतीहै।
३४ उन्होंने उसे कहा हे प्रभु हमें नित नित यह रोटी दे।
३५ ईसाने उन्हें कहा जीवनकी रोटी मैंहों वुह जो मेरे पास आताहै कभी भूखा नहोगा और वुह जो मेरा बिश्वास रखताहै

३६ कभी प्यासा नहोगा। परंतु मैंने तुम्हें कहा क्योंकि तुम मुझे
३७ देखकेभी बिश्वास नहीं लाते। सब जो कि पिताने मुझे दियाहै
मुझ पास आवेगा और उसको जो मेरे पास आताहै मैं
३८ किसी भांतिसे निकाल नदेउंगा। क्योंकि मैं स्वर्गसे इसलिये
नहीं उतरा कि अपनी इच्छाकरों परंतु उसकी इच्छा जिसने
३९ मुझे भेजाहै। और पिता जिसने मुझे भेजाहै यह चाहताहै
कि मैं उसमेंसे जो उसने मुझे दियाहै कोई बस्तु नखोओं
४० परंतु उसे पिछले दिनमें फेर उठाओं। और जिसने मुझे
भेजाहै उसकी इच्छा यहहै कि हरएक जो पुत्रको देखे और
उसपर बिश्वास लावे अनंत जीवन पावे और मैं उसे पिछले
४१ दिनमें उठाओंगा। तब सारे यहूदी उसपर कुड़कुड़ाए
इसलिये कि उसने कहा वुह रोटी जो स्वर्गसेउतरी मैंहों।
४२ और उन्होंने कहा क्या यह ईसा यूसफका पुत्र नहींहै
जिसके पिता और माताको हम जानतेहैं फेर वुह कैसे
४३ कहताहै कि मैं स्वर्गसे उतराहों। तब ईसाने उत्तर दिया
४४ और उन्हें कहा कि आपुसमें मत कुड़कुड़ाओ। कोई मनुष्य
मेरे पास आ नहींसक्ता परंतु जबलों पिता जिसने मुझे
भेजाहै उसे खैंचे और मैं उसे पिछले दिनमें उठाओंगा।
४५ आगमज्ञानियोंके पुस्तकोंमें लिखाहै कि वे सब ईश्वरसे
उपदेश पातेरहेंगे इसलिये हरएक मनुष्य जिसने पितासे
४६ सुना और सीखाहै मेरे पास आताहै। यह नहीं कि किसी
मनुष्यने पिताको देखाहै केवल वुह जो ईश्वरसेहै उसने
४७ पिताको देखाहै। मैं तुमसे सत्य सत्य कहताहों वुह जो मेरा
४८ बिश्वासीहै अनंत जीवन रखताहै। जीवनकी वुह रोटी मैंहों।
४९।५० तुम्हारे पितरोंने बनमें मन्न खाया और मरगये। जो रोटी
५१ स्वर्गसे उतरतीहै वुहहै कि मनुष्य उसे खाके नमरे। वुह
जीवती रोटी जो स्वर्गसे उतरी मैंहों यदि कोई मनुष्य इस
रोटीको खाय वुह सदा जीवतारहेगा और वुह रोटी जो मैं

देउंगा मेरा मांसहै जिसे मैं जगतके जीवनके लिये देउंगा।
५२ तब यहूदी आपुसमें बिवाद करनेलगे कि यह मनुष्य हमें
५३ अपना मांस कैसे देसक्ताहै कि खायें। ईसाने उन्हें कहा मैं
तुम्होंसे सत्यसत्य कहताहों यदि तुम मनुष्यके पुत्रका मांस
नखाओ और उसका लोहू नपीयो तुम्होंमें जीवन नहोगा।
५४ जोकोई मेरा मांस खाताहै और मेरा लोहू पीताहै अनंत
जीवन रखताहै और मैं उसे पिछले दिन उठाओंगा।
५५ क्योंकि मेरा मांस ठीक भोजनहै और मेरा लोहू ठीक पान
५६ है। वुह जो मेरा मांस खाताहै और मेरा लोहू पीताहै
५७ मुझमें बास करताहै और मैं उसमें। जैसा कि जीवते पिताने
मुझे भेजाहै और मैं पितासे जीवताहों उसी भांतिसे वुह जो
५८ मुझे खाताहै मुझसे जीवेगा। यहहै वुह रोटी जो स्वर्गसे
उतरी नजैसा तुम्हारे पितरोंने मन्न खाया और मरगये वुह
५९ जो इस रोटीको खाताहै सदा जीवता रहेगा। उसने
कपरनाऊममें उपदेश करतेहुए किसी मंडलीमें ये बातें कहीं।
६० तब उसके शिष्यनमेंसे बहुतोंने सुनके कहा कि यह कठीन
६१ बचनहै उसे कौन सुनसक्ता। ईसाने आपमें जानकर कि
उसके शिष्य आपुसमें उस बात पर कुड़कुड़ातेहैं उसने उन्हें
६२ कहा क्या यह तुम्हें उदास करतीहै। पर यदि तुम मनुष्यके
पुत्रको ऊपर जाते देखोगे जहां वुह आगेथा तो क्याहोगा।
६३ आत्माहै जो जिलावताहै मांस लाभ नहीं करता जो बातें मैं
६४ तुम्हें कहताहों आत्माहैं और जीवनहैं। परंतु तुम्होंमें कितने
हैं जो बिश्वास नहीं करते क्योंकि ईसा आरंभसे जानताथा
कि वे कौनहैं जो बिश्वास नकरतेथे और कौन उसेपकड़वावेगा।
६५ फेर उसने कहा इसलिये मैंने तुम्हें कहा कि केवल उसको
छोड़ जिसे मेरे पितासे यहो दियागयाहै कोई मनुष्य मेरे
६६ पास नहीं आसक्ता। उसी घड़ी उसके शिष्यन
मेंसे बहुतेरे उलटे फिरगये और फेर उसके संग नचले।

६७ तब ईसाने उन बारहको कहा क्या तुमभी जाओगे।
६८ शमऊन पतरसने उसे उत्तर दिया कि हे प्रभु हम किसपास
६९ जायें अनंत जीवनके बचन तो तेरे पासहैं। और हम बिश्वास
रखतेहैं और निश्चय जानतेहैं कि तू मसीह जीवते ईश्वरका
७० पुत्रहै। ईसाने उन्हें कहा क्या मैंने तुम बारहको नहीं चुना
७१ और तुम्हांमें एक पिशाचहै। उसने शमऊनके पुत्र यहूदा
अस्खरयूतीके बिषयमें कहा क्योंकि वुह बारहमेंसे एकथा जो
चाहताथा कि उसे पकड़वादे।

७ सातवां पर्ब्ब

१ इनसभोंके पीछे ईसा जलीलमें फिराकिया क्योंकि उसने
नचाहा कि यहूदियःमें फिरे इसकारण कि यहूदी उसे
२ मारडालनेको चिंतामेंथे। और यहूदियोंके तंबुओंका पर्ब्ब
३ निकटहुआ। इसलिये उसके भाइयोंने उसे कहा यहांसे
सिधार और यहूदियःमें जा कि उन कार्य्योंको जो तू करताहै
४ तेरे शिष्यभी देखें। क्योंकि कोई नहीं जो छिपके कुछ कार्य
करताहै और वुह आप चाहे कि प्रगटहो यदि तू ये कार्य
५ करताहै तो अपनेको जगतको दिखा। यह इसलियेथा कि
६ उसके भाईभी उसपर बिश्वास नलाये। तब ईसाने उन्हें
कहा कि मेरा समय अभी नहीं आया परंतु तुम्हारा समय
७ सदाधराहै। जगत तुमसे बैर नहीं करसक्ता परंतु मेरा
बैर करताहै क्योंकि मैं उसपर साक्षी देताहों कि उसके
८ कार्य बुरेहैं। तुम इस पर्ब्बमें जाओ मैं अभी इस पर्ब्बमें नहीं
९ जाता क्योंकि मेरा समय अभी पूरा नहींहुआ। वुह ये बातें
१० कहिके जलीलमें रहा। परंतु जब उसके भाई
११ पर्ब्बमें गये वुहभी प्रगटसे नहीं परंतु गुप्तसे गया। तब यहूदी
१२ पर्ब्बमें उसे ढूंढ़ने और कहनेलगे कि वुह कहांहै। और लोग
उसके बिषयमें बहुत बड़बड़ानेलगे कितने कहतेथे कि वुह

उत्तम मनुष्यहै और कितने कहतेथे कि नहीं परंतु वुह लोगों
१३ को छलदेताहै। तिसपरभी यहूदियोंके डरकेमारे कोई
मनुष्य उसकी अवस्थामें खोलके नहीं कहताथा।
१४ और पर्ब्बके मध्यमें ईसाने मंदिरमें जाके उपदेशकिया।
१५ तब यहूदी आश्चर्यसे बोले कि यह मनुष्य बिनापढ़े बिद्या
१६ किसभांतिसे जानताहै। ईसाने उन्हें उत्तरदेके कहा मेरा
१७ उपदेश मेरा नहीं परंतु उसकाहै जिसने मुझे भेजा। यदि
मनुष्य उसकी इच्छापर चलाचाहे इस उपदेशको समुझे कि
१८ वुह ईश्वरसेहै अथवा कि मैं आपसे करताहों। वुह जो अपने
पाससे कुछ कहताहै अपनी बड़ाई चाहताहै परंतु वुह जो
उसकी बड़ाई चाहताहै जिसने उसे भेजा वही सच्चाहै और
१९ उसमें कुछ अन्याय नहीं। क्या मूसाने तुम्हें व्यवस्था नहीं
दिई और कोई तुममेंसे व्यवस्था पर नहीं चलता तुम मुझे
२० मारडालनेको चिंता क्यों करतेहो। लोगोंने उत्तरदिया और
कहा कि तुझमें पिशाचहै कौन तुझे मारडालनेकी चिंता
२१ करताहै। ईसाने उत्तरदिया और उन्हें कहा मैंने एक
२२ कार्य किया और तुम आश्चर्य करतेहो। मूसाने तुम्हें खतनःकी
आज्ञा दिईहै यद्यपि कि वुह मूसासे नहीं परंतु पितरोंसेहै
२३ और तुम बिश्रामके दिनमें मनुष्यका खतनः करतेहो। जब
कि बिश्रामके दिन मनुष्यका खतनः कियाजाताहै जिसमें मूसा
की व्यवस्था भंग नहो तो क्या तुम इसलिये मुझपर रिसियातेहो
कि मैंने बिश्रामके दिनमें एक मनुष्यको निर्धार चंगाकिया।
२४ दृष्टिके समान बिचार मत करो परंतु ठीक बिचार करो
२५ तब कितने यिरोशलीमियोंने कहा क्या यह वुह नहीं जिसे वे
२६ मारडालनेको ढूंढ़तेहैं। परंतु देखो वुह तो हियावसे बातें
करताहै और वे उसे कुछ नहीं कहते क्या प्रधानोंनेभी
२७ निश्चय किया कि ठीक यही मसीहहै। परंतु हम जानतेहैं
कि यह कहांसेहै पर जब मसीह आवेगा कोई नजानेगा कि

२८ वुह कहांसेहै। तब ईसाने मंदिरमें उपदेश करतेऊए यों पुकारा कि तुम मुझे पहिचानते और जानतेहो कि मैं कहां सेहों और मैं आपसे नहीं आया परंतु जिसने मुझे भेजाहै
२९ सत्यहै उसे तुम नहीं जानते। पर मैं उसे चीन्हताहों क्योंकि
३० मैं उसके ओरसेहों और उसने मुझे भेजाहै। तब उन्होंने चाहा कि उसे पकड़लें पर किसी मनुष्यने उसपर हाथ नडाले
३१ क्योंकि उसका समय अबलों नपऊंचाथा। और बऊतेरे उन लोगोंमेंसे उसपर बिश्वास लाये और बोले क्या जब मसीह आवेगा वुह इनसे जो इसने किये हैं अधिक आश्चर्य करेगा।
३२ फरीसियोंने सुना कि लोग उसके बिषयमें ऐसा बड़बड़ातेथे फरीसियों और प्रधान याजकोंने प्यादोंको भेजा
३३ कि उसे पकड़लें। तब ईसाने उन्हें कहा अब थोड़ी बेरलों मैं तुम्हारे संगहों और जिसने मुझे भेजा उसके पास जाताहों।
३४ तुम मुझे ढूंढ़ोगे और नपाओगे और जहां मैंहों तुम आनहीं
३५ सक्ते। उस समय यहूदियोंने आपुसमें कहा कि वुह कहां जायगा कि हम उसे नपावेंगे क्या वुह उन लोगोंके पास जो यूनानियोंमें बिथरेऊएहैं जायगा और यूनानियोंको उपदेश
३६ करेगा। यह क्या बातहै जो उसने कही कि तुम मुझे ढूंढ़ोगे
३७ और नपाओगे और जहां मैंहों तुम आ नसको। फेर पर्व्वके पिछले और बड़े दिनमें ईसा खड़ाऊआ और यह कहिके पुकारा यदि कोई प्यासाहो तो मुझपास आवे और पीवे।
३८ वुह जो मुझपर बिश्वास रखताहै जैसा धर्मग्रंथमें लिखाहै
३९ उसके पेटसे अमृत जलकी नदीयां बहेंगी। उसने यह आत्मा की कही जिसे उसके बिश्वासी पानेपरथे क्योंकि धर्मात्मा अब लों नहीं दियागया इसलिये कि ईसा अबलों ऐश्वर्यमान न
४० ऊआथा। तब उनलोगोंमेंसे बऊतेरोंने यह
४१ सुनकर कहा निश्चय यह वुह आगमज्ञानीहै। औरोंने कहा यह मसीहहै परंतु कितने बोले क्या मसीह जलीलसे

४२ निकलेगा। क्या ग्रंथोंमें नहीं लिखाहै कि मसीह दाऊदके बंशसे आताहै और बैतुल्लहमकी बस्तीसे जहां दाऊदथा।
४३।४४ सो लोगोंमें उसके लिये बिभागहुआ। और कितनोंने चाहा कि उसे पकड़लें परंतु किसीने उसपर हाथ नडाले।
४५ तब प्यादे प्रधान याजकों और फरीसियोंके पास आये
४६ और उनके कहा तुम उसे क्यों नलाये। प्यादोंने उत्तरदिया कि कभी कोई मनुष्यने इस मनुष्यके समान बचन नकहा।
४७ तब फरीसियोंने उन्हें उत्तरदिया क्या तुमभी भरमायेगये।
४८ क्या कोई प्रधान अथवा फरीसियोंमेंसे उसपर बिश्वास लाये।
४९ परंतु ये लोग जो ब्यवस्थाको नहीं जानते स्रापितहैं।
५० नीकूदिमूसने जो रातके ईसाके पास आयाथा और एक
५१ उनमेंसेथा उन्हें कहा। क्या हमारी ब्यवस्था किसीपर उसे पहिले कि उसको सुने और जाने कि वुह क्या करताहै आज्ञा
५२ करतीहै। उन्होंने उत्तर देके उसे कहा क्या तूभी जलीलका है ढूंढ़ और देख कि जलीलसे कोई आगमज्ञानी नहीं
५३ निकलता। फेर हरएक अपने अपने घरके गया।

८ आठवां पर्व्व

१।२ तब ईसा जलपाईके पहाड़को गया। और बिहानको तड़के वुह मंदिरमें फेर आया और सब लोग उसके पास आये
३ और उसने बैठके उन्हें उपदेश किया। तब अध्यापक और फरीसी एक स्त्रीको जो ब्यभिचारमें पकड़ीगईथी उसके पास
४ लाये और उसे मध्यमें खड़ी करके। उसको बोले कि हे गुरु
५ यह स्त्री ब्यभिचार करतेही पकड़ीगई। अब मूसाने तो ब्यवस्थामें हमें आज्ञा किई कि ऐसीयोंको चाहिए कि
६ पत्थरवाह किईजायं परंतु तू क्या कहताहै। उन्होंने उसको परीक्षाके लिये यह कहा कि वे उसपर दोषका कारण पावें
७ परंतु ईसाने नीचे झुकके अंगुलीसे भूमि पर लिखा। सो जब

वे उसे पूछते गये उसने सीधे होकर उन्हें कहा वुह जो
८ तुम्होंमें निष्पापहै पहिले उसे पत्थर मारे। और उसने फेर
९ झुकके भूमिपर लिखा। और जिन्होंने सुना मनहींमनमें
दोषी होके छुटसे लेके पिछलेलों एकएक करके चलेगये और
१० ईसा अकेला रहिगया और वुह स्त्री मध्यमें खड़ीरही। जब
ईसाने सीधे होकर स्त्रीको छोड़ किसीको नदेखा उसने उसे
कहा हे स्त्री तेरे दोषदायक कहांहैं क्या किसीने तुझपर
११ आज्ञा नकिई। उसने कहा हे प्रभु किसीने नहीं ईसाने उसे
कहा मैंभी तुझपर आज्ञा नहीं करता जा और फेर पाप
१२ मत कर। तब ईसाने उन्हें कहा मैं जगतका
उंजियालाहों वुह जो मेरे पीछे आताहै अंधियारेमें नचलेगा
१३ परंतु जीवनका उंजियाला पावेगा। तब फरीसियोंने उसे
कहा तू अपने बिषयमें साक्षी देताहै तेरी साक्षी ठीक नहीं।
१४ ईसाने उत्तर देके उन्हें कहा यद्यपि मैं अपने बिषयमें साक्षी
देउं मेरी साक्षी सचहै क्योंकि मैं जानताहों मैं कहांसे आया
और कहां जाताहों परंतु तुम नहीं जानते मैं कहांसे आया
१५ और कहां जाताहों। तुम शारीरिक बिचार करतेहो मैं
१६ किसी मनुष्य पर बिचार नहीं करता। तथापि यदि मैं
बिचारकरों मेरा बिचार सचहै क्योंकि मैं अकेला नहींहों
१७ परंतु मैं और पिता जिसने मुझे भेजा। तुम्हारी ब्यवस्थामेंभी
१८ लिखाहै कि दो मनुष्यकी साक्षी ठीकहै। एक तो मैंहों जो
अपने बिषयमें साक्षी देताहों और एक पिता जिसने मुझे
१९ भेजाहै मेरे लिये साक्षी देताहै। तब उन्होंने उसे कहा तेरा
पिता कहांहै ईसाने उत्तरदिया तुम नमुझे नमेरे पिताको
जानते यदि तुम मुझे जानते तो मेरे पिताकोभी जानते।
२० ईसाने मंदिरमें उपदेश करतेहुए भंडारमें ये बातें कहीं
और किसीने उसपर हाथ नडाले कि उसका समय अबलों
२१ नहीं आयाथा। तब ईसाने फेर उन्हें कहा मैं तो जाताहों

और तुम मुझे ढूंढ़ोगे और अपने पापोंमें मरोगे जिधर मैं
२२ जाताहों तुम आ नहीं सक्ते। तब यहूदियोंने कहा क्या वुह
अपनेको मारडालेगा कि वुह कहताहै जिधर मैं जाताहों तुम
२३ नहीं आसक्ते। फेर उसने उन्हें कहा तुम तलेसेहो मैं ऊपर
२४ सेहों तुम इस जगतकेहो मैं इस जगतका नहीं। इसलिये
मैंने तुम्हें कहा कि तुम अपने पापोंमें मरोगे क्योंकि यदि तुम
२५ बिश्वास नकरो कि मैंहों तुम अपने पापोंमें मरोगे। तब
उन्होंने उसे कहा तू कौनहै ईसाने उन्हें कहा कि वही जो मैंने
२६ तुम्हें आरंभसे कहा। मुझपास बहुतसी बातेंहैं कि तुम्हारी
अवस्थामें कहों और बिचार करों परंतु जिसने मुझे भेजाहै
सत्यहै सो मैं जगतको वे बातें कहताहों जो मैंने उसे सुनीहैं।
२७ उन्होंने नसमझा कि वुह उन्हें पिताके बिषयमें कहताथा।
२८ फेर ईसाने उन्हें कहा जब तुम मनुष्यके पुत्रको ऊपर
उठाओगे तब जानोगे कि मैंहों और मैं आपसे कुछ नहीं
करता परंतु जैसा कि मेरे पिताने मुझे आज्ञा किईहै मैं वे
२९ बातें कहताहों। और जिसने मुझे भेजाहै मेरे संगहै पिताने
मुझे अकेला नछोड़ा क्योंकि मैं सदा आपसे कार्य करताहों
३० जो उसे सुहातेहैं। जब वुह ये बातें कहताथा बहुतेरे उस
३१ पर बिश्वास लाये। तब ईसाने उन यहूदियोंको जो उसपर
बिश्वास लायेथे कहा यदि तुम मेरे बचनपर स्थिर रहो तो
३२ तुम मेरे शिष्य ठीक होओ। और तुम सत्यको जानोगे और
३३ सत्य तुम्हें निर्बन्ध करेगा। उन्होंने उसको उत्तर दिया
कि हम इबराहीमके बंशहैं और कभी किसीके बंधनमें
३४ नथे तू कैसे कहताहै कि तुम निर्बन्ध कियेजाओगे। ईसाने
उन्हें उत्तर दिया मैं तुम्होंसे सत्यसत्य कहताहों जो
३५ कोई पाप करताहै वुह पापका दासहै। और दास सदा
३६ घरमें नहीं रहता परंतु पुत्र सदा रहताहै। इसलिये यदि
३७ पुत्र तुम्हें निर्बन्ध करे तुम ठीक निर्बन्ध होओगे। मैं जानताहों

कि तुम इबराहीमके संतानहो परंतु तुम मुझे मारडालने
३८ चाहतेहो क्योंकि मेरा बचन तुम्होंमें नहींहै। मैंने जो अपने
पिताके संग देखाहै वही करताहों और जो तुम्होंने अपने
३९ पिताके संग देखाहै करतेहो। उन्होंने उत्तर दिया और उसे
कहा हमारा पिता इबराहीमहै ईसाने उन्हें कहा यदि तुम
इबराहीमके संतान होते तो तुम इबराहीमके कार्य करते।
४० परंतु तुम मुझे मारडालने चाहतेहो और मैं एक मनुष्यहों
जिसने तुम्हें वुही सत्य कहा जो मैंने ईश्वरसे सुना इबराहीमने
४१ यह नहीं किया। तुम अपने पिताके कार्य करतेहो तब उन्होंने
उसे कहा हमलोग ब्यभिचारसे उत्पन्न नहीं ऊए हमारा
४२ पिता एकहै ईश्वर। ईसाने उन्हें कहा यदि ईश्वर तुम्हारा
पिता होता तो तुम मुझे प्यार करते क्योंकि मैं ईश्वरसे निकला
और आयाहों मैं आपसे नहीं आया परंतु उसने मुझे
४३ भेजा। तुम मेरी बोली क्यों नहीं समझते इसकारण तुम मेरे
४४ बचन नहीं सुनसक्ते। तुम अपने पिता पिशाचसेहो और
चाहतेहो कि अपने पिताकी बांछा करो वुह तो आरंभसे
बधिकथा और सत्यमें स्थिर नरहा क्योंकि उसमें सचाई नहीं
जब वुह झूठ कहताहै तुम अपनेहीका बोलताहै क्योंकि वुह
४५ झूठाहै और झूठका पिताहै। पर इसकारण कि मैं सत्य
४६ कहताहों तुम मेरी प्रतीति नहीं करते। तुम्होंमें कौन मुझ
पर पाप ठहरासक्ताहै परंतु यदि मैं सत्य कहताहों तुम
४७ मेरी प्रतीति क्यों नहीं करते। वुह जो ईश्वरकाहै ईश्वरकी
बातें सुनताहै तुम इसलिये नहीं सुनते कि तुम ईश्वरके
४८ नहींहो। तब यहूदियोंने उत्तर दिया और उसे कहा क्या
हम अच्छा नहीं कहते कि तू सामरीहै और तेरे संग पिशाच
४९ है। ईसाने उत्तर दिया कि मेरे संग पिशाच नहीं परंतु मैं
अपने पिताका आदर करताहों और तुम मेरा अनादर
५० करतेहो। और मैं अपना महिमा नहीं ढूंढता एकहै जो

५१ ढूंढताहै और बिचार करताहै। मैं तुम्हेंासे सत्य सत्य कहताहों यदि कोई मनुष्य मेरा बचन धारण करे मृत्युको
५२ कभी नदेखेगा। तब यहूदियोंने उसे कहा अब हम जानतेहैं कि तेरे संग पिशाचहै इबराहीम और आगमज्ञानी मरगये और तू कहताहै यदि कोई मेरा बचन धारण करे वुह कभी
५३ मृत्युका स्वाद नचीखेगा। क्या तू हमारे पिता इबराहीमसे जो मरगया बड़ाहै सब आगमज्ञानी मरगये तू अपनेको क्या
५४ ठहराताहै। ईसाने उत्तर दिया यदि मैं अपना आदर करों मेरा आदर कुछ नहीं मेरा पिताहै जिसको तुम कहतेहो कि हमारा ईश्वरहै वुह मेरा आदर करताहै।
५५ तुम्होंने उसे नजाना परंतु मैं उसे जानताहों और यदि मैं कहों कि मैं उसे नहीं जानता मैं तुम्हारे समान झूठा होउंगा परंतु मैं उसे जानताहों और उसका बचन धारण करताहों।
५६ तुम्हारा पिता इबराहीम मेरा दिन देखनेको अभिलाषी
५७ था सो उसने देखा और आनंद हुआ। यहूदियोंने उसे कहा तेरा बय अबलों पचास बरसका नहीं और क्या तूने
५८ इबराहीमको देखा। ईसाने उन्हें कहा मैं तुम्होंसे सत्य सत्य
५९ कहताहों कि इबराहीमके होनेसे आगे मैंहों। तब उन्होंने उसे मारनेको पत्थर उठाये परंतु ईसाने आपको छिपालिया और मंदिरसे बाहर निकलके उनके मध्यमेंसे चलागया।

९ नवां पर्ब्व

१ और उसने जाते जाते एक मनुष्यको देखा जो जन्मसे अंधाथा।
२ और उसके शिष्यनने उस्से पूछा कि हे गुरु किसने पाप किया इस मनुष्यने अथवा इसके माता पिताने कि यह
३ अंधा उत्पन्न हुआ। ईसाने उत्तर दिया नतो इस मनुष्यने पाप किया न इसके माता पिताने परंतु कि ईश्वरके
४ कार्य उसमें प्रगट होवें यों हुआ। जबलों दिनहै अवश्यहै

कि जिसने मुझे भेजाहै उसके कार्य करों रात आतीहै
५ जब कोई कार्य नहीं करसक्ता। जबलों मैं जगतमेंहों जगतका
६ उंजियालाहों। जब उसने यों कहा तो उसने भूमिपर थूका
और थूकसे मिट्टी गूंधी और उस मिट्टीसे उस अंधेकी आंखों
७ पर लगाई। और उसे कहा कि जा और सिलोआममें
अर्थात भेजेहुए कुंडमें स्नानकर सो वुह गया और स्नानकिया
८ और देखतेहुए आया। तब जिन्होंने उसे आगे
अंधा देखाथा वे और परोसी बोले क्या यह वुह नहीं जो
९ बैठा भीख मांगताथा। कितने बोले कि यह वहीहै औरोंने
१० कहा कि यह उसके समानहै उसने कहा मैं वहीहों। फेर
११ उन्होंने उसको कहा तेरी आंखें क्योंकर खुलगईं। उसने
उत्तर दिया और कहा कि एक मनुष्यने जो ईसा कहावताहै
मिट्टी गूंधी और मेरी आंखों पर लगाई और मुझे कहा कि
सिलोआमके कुंडमें जा और स्नान कर और मैंने जाके स्नान
१२ किया और दृष्टि पाई। तब उन्होंने उसको कहा कि वुह
कहांहै उसने कहा कि मैं नहीं जानता।
१३ वे उसको जो आगे अंधाथा फरीसियोंके पास लाये।
१४ और जब कि ईसाने मिट्टीको गूंधके उसकी आंखें खोलीं वुह
१५ बिश्रामका दिनथा। फरीसियोंनेभी फेर उसे पूछा कि तूने
किस रीतिसे अपनी दृष्टि पाई उसने उन्हें कहा कि उसने
मेरी आंखों पर गीली मिट्टी लगाई और मैंने नहाया और
१६ देखताहों। तब फरीसियोंमेंसे कितनोंने कहा कि यह मनुष्य
ईश्वरके ओरसे नहीं क्योंकि वुह बिश्रामके दिनको नहीं
मानता औरोंने कहा कि पापी मनुष्य ऐसे आश्चर्य कैसे
१७ करसक्तेहैं और उन्होंमें बिभाग हुआ। उन्होंने उस अंधे
मनुष्यको फेर कहा तू उसकी अवस्थामें जिसने तेरी आंखें
१८ खोलीं क्या कहताहै उसने कहा वुह आगमज्ञानीहै। परंतु
यहूदियोंने इस बातकी प्रतीति नकिई कि वुह अंधाथा और

अपनी दृष्टि पाई जबलों कि उन्होंने उस मनुष्यके माता पिता
१९ को जिसने दृष्टि पाईथी बुलाया। और उनसे पूछा कि क्या
यह तुम्हारा पुत्र है जिसे तुम कहतेहो कि अंधा उत्पन्न हुआथा
२० फेर वुह अब क्योंकर देखताहै। उसके माता पिताने उन्हें
उत्तर दिया और कहा हम जानतेहैं कि यह हमारा पुत्रहै
२१ और यह कि वुह अंधा उत्पन्न हुआथा। परंतु वुह अब
किस रीतिसे देखताहै हम नहीं जानते अथवा उसकी
आंखें किसने खोलीं हम नहीं जानते वुह तरुणहै उसे
२२ पूछलो वुह अपनी आप कहेगा। उसके माता पिताने इस
लिये यह कहा कि वे यहूदियोंसे डरतेथे क्योंकि यहूदियोंने
ठहरायाथा कि यदि कोई मानलेवे कि वुह मसीहहै मंडली
२३ से बाहर निकालाजाय। सो उसके माता पिताने कहा कि
२४ वुह तरुणहै उसीसे पूछो। तब उन्होंने उस मनुष्यको जो
अंधाथा फेर बुलाकर कहा कि ईश्वरकी स्तुति कर हम
२५ जानतेहैं कि यह मनुष्य पापीहै। उसने उत्तर देके कहा कि
यदि वुह पापी होय मैं नहीं जानता एक बात मैं जानताहों
२६ कि मैं आगे अंधाथा अब देखताहों। तब उन्होंने उसे फेर
पूछा कि उसने तुझे क्या किया उसने किस रीतिसे तेरी आंखें
२७ खोलीं। उसने उन्हें उत्तर दिया कि मैं तो तुम्होंसे अभी
कहिचुका और तुम्होंने नसुना किसलिये तुम फेर सुना
चाहतेहो क्या तुमभी चाहतेहो कि उसके शिष्य होओ।
२८ तब वे उसे दुर्बचन कहिके बोले कि तू उसका शिष्यहै हम
२९ मूसाके शिष्यहैं। हम जानतेहैं कि ईश्वरने मूसासे बार्त्ता किई
३० पर हम नहीं जानते कि यह कहांकाहै। उस मनुष्यने उत्तर
दिया और उन्हें कहा यह आश्चर्यहै कि तुम नहीं जानते वुह
३१ कहांकाहै और उसने मेरी आंखें खोलीहैं। हम तो जानतेहैं
कि ईश्वर पापियोंकी नहीं सुनता परंतु यदि कोई ईश्वरका
भक्त होय और उसकी इच्छापर चलताहोय वुह उसकी

३२ सुनताहै। जगतके आरंभसे कभी सुन्नेमें नआयाथा कि
३३ किसीने एकको आंखें जो अंधा उत्पन्न हुआ खोलींहों। यदि यह मनुष्य ईश्वरके ओरसे नहोता तो कुछ नकरसक्ता।
३४ उन्होंने उत्तर देके उसे कहा कि तू तो पापोंमें संपूर्ण उत्पन्न हुआ और तू हमें सिखाताहै तब उन्होंने उसे बाहर
३५ किया। ईसाने सुना कि उन्होंने उसे बाहर निकालदिया तब उसने उसे पाके कहा क्या तू ईश्वरके पुत्र पर
३६ बिश्वास लाताहै। उसने उत्तर दिया और कहा हे प्रभु वुह
३७ कौनहै कि मैं उसपर बिश्वास लाओं। ईसाने उसे कहा तूने
३८ उसे देखाहै और वुह जो तेरे संग बोलताहै वहीहै। उसने कहा हे प्रभु मैं बिश्वास लाताहों और उसने उसको दंडवत
३९ किया। तब ईसाने कहा कि मैं न्यायके लिये इस जगतमें आयाहों कि वे जो नहीं देखतेहैं देखें और वे जो
४० देखतेहैं अंधे होवें। फरीसियोंने जो उसके संगथे ये बातें
४१ सुनके उसे कहा क्या हमभी अंधेहैं। ईसाने उन्हें कहा यदि तुम अंधे होते तो तुम्में पाप नहोता परंतु तुम तो कहतेहो कि हम देखतेहैं इसलिये तुम्हारा पाप धराहै।

१० दसवां पर्व्व

१ मैं तुम्होंसे सत्यसत्य कहताहों जो कि द्वारसे भेड़शालामें प्रवेश नहीं करता परंतु दूसरे ओरसे चढ़जाताहै चार और
२ बटमारहै। परंतु वुह जो द्वारसे प्रवेश करताहै भेड़ोंका
३ चरवाहाहै। द्वारपाल उसके लिये खोलताहै और भेड़ें उसका शब्द सुनतीहैं और वुह अपनी भेड़ोंको नाम लेके
४ बुलाताहै और उन्हें बाहर लेजाताहै। और जब वुह अपनी भेड़ोंको बाहर करताहै वुह उनके आगे आगे जाताहै और भेड़ें उसके पीछे पीछे चलतीहैं क्योंकि वे उसके शब्द
५ पहिचानतीहैं। और वे उपरीके पीछे नहीं जातीं परंतु उस्से

भागतीहैं इसलिये कि वे उपरीके शब्द नहीं पहिचानतीं।
६ ईसाने यह दृष्टांत उन्हें कहा परंतु उन्होंने नसमझा कि वुह
७ उन्हें क्या बातें कहताथा तब ईसाने फेर उन्हें कहा मैं तुम्हेंसे
८ सत्य सत्य कहताहों भेड़ोंका द्वार मैंहों। सब जितने मुझसे
आगे आये चोर और बटमारहैं परंतु भेड़ोंने उनकी नसुनी।
९ द्वार मैंहों यदि कोई मुझसे प्रवेश करे वुह बचजायगा और
भीतर बाहर आयाजाया करेगा और चराई पावेगा।
१० चोर नहीं आता परंतु केवल चोरी करने और मारडालने
और नाश करनेको मैं आयाहों कि वे जीवन पावें और कि वे
११ अधिक बढ़ती पावें। अच्छा चरवाहा मैंहों अच्छा चरवाहा
१२ भेड़ोंके लिये अपना प्राण देताहै। परंतु जो बनिहारहै और
चरवाहा नहीं जिसकी भेड़ें अपनी नहींहैं ऊंड़ारको आते
देखताहै और भेड़ोंको छोड़के भागताहै और ऊंड़ार उन्हें
१३ पकड़ताहै और भेड़ोंको छिन्न भिन्न करताहै। बनिहार
भागताहै इसलिये कि वुह बनिहारहै और भेड़ोंके लिये
१४ चिंता नहीं करता। अच्छा चरवाहा मैंहों और अपनीको
१५ पहचानताहों और मेरी मुझे पहिचानतीहैं। जिस रीतिसे
पिता मुझे जानताहै उसी रीतिसे मैं पिताको जानताहों
१६ और मैं भेड़ोंके लिये अपना प्राण देताहों। मेरी औरभी
भेड़ेंहैं जो इस झुंडकी नहीं अवश्यहै कि मैं उन्हेंभी लाओं
और वे मेरा शब्द सुनेंगी और एक झुंड और एक चरवाहा
१७ होगा। पिता मुझे इसलिये प्यार करताहै कि मैं अपना
१८ प्राण देताहों कि मैं उसे फेरलेउं। कोई उसको मुझसे नहीं
लेता परंतु मैं उसे आपसे देताहों मुझमें सामर्थ्यहै कि उसे
देउं और मुझमें सामर्थ्यहै कि उसे फेरलेउं यही आज्ञा मैंने
१९ अपने पितासे पाई। तब यहूदियोंमें इन बातों
२० के कारण फेर विभागहुआ। और उनमेंसे बहुतोंने कहा
कि उसमें पिशाचहै और बौड़ाहाहै तुम उसकी क्यों सुनतेहो।

२१ औरोंने कहा कि जिसमें पिशाचहै उसकी ये बातें नहींहैं क्या पिशाच अंधाकी आंखें खोलसक्ताहै।

२२ और यिरोशलीममें स्थापित पर्व्व हुआ और जाड़ेका समय
२३ था। तब ईसा मंदिरमें सुलेमानके ओसारेमें फिरताथा।
२४ उस समय यहूदियोंने उसके चारोओर आके उसे कहा कि तू कबलों हमारे मनको अधरमें रक्खेगा यदि तू मसीहहै
२५ हमें खोलके कह। ईसाने उन्हें उत्तर दिया मैंने तो तुम्हें कहा और तुम्होंने बिश्वास नकिया जो कार्य मैं अपने पिताके नाम
२६ से करताहों वे मेरी साची देतेहैं। परंतु तुम बिश्वास नहीं लाते क्योंकि जैसा मैंने तुम्हें कहा तुम मेरी भेड़ोंमेंसे नहीं।
२७ मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनतीहैं और मैं उन्हें जानताहों और
२८ वे मेरे पीछे आतीहैं। और मैं उन्हें अनंत जीवन देताहों और वे कभी नाश नहोंगी और कोई उन्हें मेरे हाथोंसे छीन
२९ नलेगा। मेरा पिता जिसने उन्हें मुझे दियाहै सबसे बड़ाहै और कोई सामर्थी नहीं कि मेरे पिताके हाथोंसे छीनलेवे।
३०।३१ मैं और पिता एकहैं। तब यहूदियोंने फेर पत्थर उठाए
३२ कि उसपर पत्थरवाह करें। ईसाने उन्हें उत्तर दिया कि मैंने अपने पिताके अनेक अच्छे कार्य तुम्हें दिखाएहैं उनमेंसे कौनसे
३३ कार्यके लिये तुम मुझे पत्थरवाह करतेहो। यहूदियोंने उसे उत्तर देके कहा कि हम तुझे अच्छे कार्यके लिये नहीं पत्थरवाह करते परंतु ईश्वरकी अपनिंदाके लिये और इसलिये कि तू
३४ मनुष्य होके अपनेको ईश्वर ठहराताहै। ईसाने उन्हें उत्तर दिया क्या तुम्हारी व्यवस्थामें नहीं लिखाहै कि मैंने कहा कि
३५ तुम ईश्वरहो। उसने तो उन्हें जिनके पास ईश्वरका बचन आया ईश्वर कहा और यह अनहोनाहै कि धर्मग्रंथ खंडित
३६ होवे। तुम उसको जिसे ईश्वरने पवित्र किया और जगतमें भेजा कहतेहो कि तू ईश्वरकी अपनिंदा करताहै क्योंकि मैंने
३७ कहा मैं ईश्वरका पुत्रहों। यदि मैं अपने पिताके कार्य नकरों

३८ तो मेरी प्रतीति मत करो। परंतु यदि मैं करों यद्यपि तुम मुझपर बिश्वास न लाओ कार्य्यों पर बिश्वास लाओ कि तुम जानो और निश्चय करो कि पिता मुझमें और मैं उसमें हों।
३९ तब उन्होंने फेर चाहा कि उसे पकड़लेवें परंतु वुह उन्हों
४० के हाथोंसे निकलगया। और अर्दनके उसपार वही स्थानमें जहां यहिया पहिले स्नानदेताथा फेरगया और वहां रहा।
४१ बहुतेरोंने उसके पास आके कहा कि यहियाने कोई आश्चर्य्य नदिखाया परंतु सब बातें जो यहियाने उसके बिषयमें कहीं
४२ सत्यहैं। और वहां बहुतसे उसपर बिश्वास लाये।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब

१ अब लाज़र नाम एक रोगीथा जो मरियम और उसकी
२ बहिन मरसाके गांव बैतऐनाकाथा। वही मरियम जिसने प्रभुको सुगंध तेलसे मला और अपने बालोंसे उसके चरणों
३ को पोंछा उसीका भाई लाज़र रोगीथा। इसलिये उसकी बहिनोंने उसे कहलाभेजा कि हे प्रभु देख जिसे तू प्यार
४ करताहै रोगीहै। ईसाने सुनके कहा यह मृत्युके लिये नहीं परंतु ईश्वरके महिमाके लिये कि उससे ईश्वरके पुत्रका महिमा
५ होवे। अब ईसा मरसा और उसकी बहिन और लाज़र
६ को प्यार करताथा। सो जब उसने सुना कि वुह रोगीहै उसने दो दिन औरभी उस स्थानमें जहां वुहथा बास किया।
७ फेर उसके पीछे अपने शिष्यनसे कहा कि आओ हम फेर
८ यहूदियःमें जायें। शिष्यनने उसे कहा हे गुरु थोड़ा दिन हुआ कि यहूदियोंने चाहाथा कि तुझे पत्थरवाह करें और
९ तू वहां फेर जाताहै। ईसाने उत्तर दिया कि क्या दिनमें बारह घड़ी नहींहैं यदि कोई मनुष्य दिनको चले वुह ठोकर नहीं खाता क्योंकि वुह इस जगतका उंजियाला
१० देखताहै। परंतु यदि कोई मनुष्य रातको चले वुह ठोकर

११ खाताहै क्योंकि उसमें उंजियाला नहीं। उसने ये बातें कहीं और फेर उनसे कहा कि हमारा मित्र लाज़र नींदमेंहै
१२ परंतु मैं जाताहों कि उसे जगाओं। तब उसके शिष्यनने
१३ कहा हे प्रभु यदि वुह नींदमेंहै तो चंगा होजायगा। ईसाने तो उसकी मृत्युकी कही परंतु उन्होंने समझा कि उसने नींद
१४ के चैनकी कही। तब ईसाने उन्हें खोलके कहा कि लाज़र
१५ मरगया। और मैं तुम्हारे लिये आनंदहों कि मैं वहां नथा जिसतें तुम बिश्वास लाओ तथापि उसके पास चलें।
१६ तब सूमाने जो डिदिमस कहावताहै अपने गुरुभाइयोंसे
१७ कहा आओ हमभी चलें कि उसके संग मरें। सो जब ईसा आया उसने चार दिन ऊए समाधिमें उसे पाया।
१८।१९ अब बैतऐना यिरोशलीमसे कोसएकके निकटथा। और बऊतसे यहूदी मरथा और मरियमके पास आये कि उनके
२० भाईके कारण उन्हें शांति दें। सो जब मरथाने सुना कि ईसा आताहै उसे आगे मिलनेको गई परंतु मरियम घरमें
२१ बैठीरही। तब मरथाने ईसाको कहा हे प्रभु यदि तू यहां
२२ होता तो मेरा भाई नमरता। परंतु मैं जानतीहों कि अब
२३ भी जो कुछ तू ईश्वरसे मांगे ईश्वर तुझे देगा। ईसाने उसे
२४ कहा तेरा भाई फेर उठेगा। मरथाने उसे कहा मैं जानतीहों
२५ कि वुह पुनरुत्थानमें पिछले दिन फेर उठेगा। ईसाने उसे कहा पुनरुत्थान और जीवन मैंहों वुह जो मुझपर बिश्वास
२६ रखताहै यद्यपि वुह मरजाय तथापि जीएगा। और जो कोई जीताहै और मुझपर बिश्वास रखताहै कभी नमरेगा
२७ तू इसे प्रतीति करतीहै। उसने उसे कहा हे प्रभु मैं प्रतीति करतीहों कि तू मसीह ईश्वरका पुत्रहै जो चाहियेथा कि
२८ जगतमें आवे। वुह यह कहिके चलीगई और चुपकेसे अपनी बहिन मरियमको बुलाके बोली कि गुरुजी आयाहै और
२९ तुझे बुलाताहै। जोहीं उसने सुना वुह तुरंत उठी और

३० उस पास आई। अबलों ईसा बस्तीमें नपऊंचाथा परंतु उसी
३१ स्थानमेंथा जहां मरसा उसे मिलीथी। तब यहूदियोंने जो
उसके संग घरमेंथे और उसे शांति देतेथे जब मरियमको
देखा कि वुह झपसे उठी और बाहर गई यह कहिके उसके
३२ पीछे होलिये कि वुह समाधि पर रोनेको जातीहै। और
जब मरियम वहां जहां ईसाथा आई और उसे देखा वुह
उसके चरण पर गिरके बोली हे प्रभु यदि तू यहां होता
३३ तो मेरा भाई नमरता। जब ईसाने उसे देखा कि रोतीहै
और यहूदियोंकोभी जो उसके संग आयेथे कि रोतेहैं मनमें
३४ व्याकुल होके हाय किया। और कहा तुम्होंने उसे कहां
३५ रखा उन्होंने कहा हे प्रभु आ और देख। ईसा रोया।
३६ तब यहूदियोंने कहा देखो वुह उसे कैसा प्यार करताथा।
३७ उनमेंसे कितनोंने कहा क्या यह पुरुष जिसने अंधेकी आंखें
३८ खोलीं नकरसका कि यह मनुष्यभी नमरता। तब ईसा
अपने मनमें फेर आह करताऊआ समाधि पर आया वुह
३९ एक गुहाथी और उसपर एक पत्थर धराथा। ईसाने कहा
कि पत्थरको लेजाओ उस मृतककी बहिन मरसाने उसे कहा
हे प्रभु वुह तो अब बसाताहै क्योंकि उससे चार दिन ऊए।
४० ईसाने उसे कहा क्या मैंने तुझे नहीं कहा कि यदि तू बिश्वास
४१ लावे तो ईश्वरका महिमा देखेगी। तब उन्होंने पत्थरको वहां
से जहां वुह मृतक पड़ाथा सरकाया और ईसाने आंखें ऊपर
करके कहा हे पिता मैं तेरी स्तुति करताहों कि तूने मेरी
४२ सुनीहै। और मैंने जाना कि तू मेरी नित्य सुनताहै पर
लोगोंके कारण जो आस पास खड़ेहैं मैंने यह कहा कि वे
४३ बिश्वास लावें कि तूने मुझे भेजाहै। और यह कहिके बड़े
४४ शब्दसे चिल्लाया कि हे लाज़र बाहर निकल। तब वुह जो
मराथा समाधिके बस्त्र समेत हाथ पांव बंधेऊए बाहर
निकलआया और उसका मुंह अंगोछेसे लपेटाथा ईसाने

४५ उन्हें कहा कि उसे खोलो और जानेदेओ। तब बज़तेरे यहूदी जो मरियम कने आयेथे और ये कार्य जो ईसाने किया
४६ देखतेथे उसपर बिश्वास लाये। परंतु उनमेंसे कितनेने फरीसियोंके पास जाके उन कर्य्योंको जो ईसाने कियाथा
४७ सुनाया। तब प्रधान याजकों और फरीसियों ने एक सभा एकट्ठी किई और कहा कि हम क्या करतेहैं
४८ क्योंकि यह मनुष्य बज़त आश्चर्य दिखावताहै। यदि हम उसे रहने देवें तो सब उसपर बिश्वास लावेंगे और रूमी आवेंगे
४९ और हमारे देश और कुलकोभी लेलेंगे। और एक उनमेंसे कायफास नाम जो उस बरस प्रधान याजकथा उन्हें बोला
५० कि तुम कुछ नहीं जानते। और चिंता नहीं करते हमारे लिये भलाहै कि एक पुरुष लोगोंकी संती मरे और समस्त
५१ लोग नाश नहोवें। उसने यह अपने ओरसे नकहा परंतु इस कारणसे कि वुह उस बरस प्रधान याजकथा यह आगम
५२ कहा कि ईसा उन लोगोंके कारण मरेगा। और केवल उन लोगोंके कारण नहीं परंतु इसकारणभी कि वुह ईश्वरके
५३ बालकोंको जो छिन्नभिन्न ज़ए एकट्ठे करे। सो उन्होंने उस
५४ दिनसे एका किया कि उसे घात करें। इसलिये ईसाने यहूदियोंमें प्रगटमें फिरना छोड़दिया परंतु वहांसे जाके बनके समीप एक नगरमें जो अफराईन कहावताथा वहां
५५ वुह अपने शिष्यनके संग रहनेलगा।
यहूदियोंके बीतजानेका पर्व्व निकट ज़आ और बज़तेरे पर्व्व के पहिले उस देशसे यिरोशलीमको गये कि अपनेको पवित्र
५६ करें। और ईसाको ढूंढा और मंदिरमें खड़ेहोके आपुसमें कहनेलगे कि तुम क्या समझतेहो क्या वुह पर्व्वमें नआवेगा।
५७ प्रधान याजकों और फरीसियोंनेभी आज्ञा किईथी कि यदि कोई जानताहो कि वुह कहांहै तो बतादेवे कि वे उसको पकड़लेवें।

१२ बारहवां पर्व

१ फेर पर्व्वसे छः दिन आगे ईसा बैतऐनामें आया जहां लाज़र
२ रहताथा जिसे उसने जिलायाथा। वहां उन्होंने उसकेलिये बिआरी बनाई और मरथा सेवा करतीथी परंतु उनमेंसे
३ लाज़र एकथा जो उसके संग भोजन पर बैठेथे। तब मरियम ने आधसेर अति मोलका सुगंध तेल लेके ईसाके पांव पर मला और अपने बालोंसे उसके पांव पोछे और वुह घर
४ उस तेलके सुगंधसे भरगया। तब उसके शिष्यनमेंसे एक अर्थात यहूदा अस्करयूती शमऊनका पुत्र जो उसे पकड़दाया
५ चाहताथा बोला। कि यह तेल तीन सौ चरंनीको बेचके
६ कंगालोंको क्यों नदियागया। उसने यह इसलिये नहीं कहा कि वुह कंगालोंकी चिंता करताथा परंतु इसलिये कि वुह चोरथा और डोंड़ा पास रखताथा और जो कुछ उसमें
७ पड़ताथा उठालेताथा। तब ईसाने कहा कि उसे रहने दे
८ उसने मेरे गाड़नेके दिनकेलिये यह रक्खाथा। क्योंकि तुम कंगालोंको अपने संग नित्य पाओगे परंतु मुझे नित्य नपाओगे।
९ इसलिये यहूदियोंकी बड़ी मंडलीने जाना कि वुह वहांहै और वे आये केवल ईसाके लिये नहीं परंतु जिसतें वे लाज़रकोभी देखें जिसे उसने मृत्युसे जिलाया।
१० परंतु प्रधान याजकोंने परामर्श किया कि लाज़रकोभी मार
११ डालें। क्योंकि उसके कारणसे बक्षत यहूदी गये और ईसा
१२ पर बिश्वास लाये। दूसरे दिन बक्षत लोग जो पर्व्व
१३ में आयेथे यह सुनके कि ईसा यिरोशलीममें आताहै। खजूरकी डालियां लेके निकले कि उस्से मिलें और पुकारा कि होशाना
१४ इसराईलके राजाको जो प्रभुके नामसे आताहै धन्य। और जब ईसाने एक बच्चा गदहा पाया तो उसपर चढ़ा जैसा कि
१५ लिखाहै। कि हे सैहूनकी पुत्री मत डर देख तेरा राजा
१६ गदहेके बच्चे पर चढ़के आताहै। उसके शिष्यनने आरंभमें

ये बातें नसमुझीं परंतु जब ईसा ऐश्वर्यमान ऊआ तब उन्होंने स्मरण किया कि ये बातें उसकी अवस्थामें लिखीथीं और
१७ उन्होंने उसे ये व्यवहार किये। तब जो लोग उसके संगथे जब उसने लाज़रको समाधिसे बाहर बुलाया और जिलाया
१८ उन्होंने साक्षी दिई। इस कारणभी मंडली उसे मिलने को निकली क्योंकि उन्होंने सुना कि उसने यह आश्चर्य
१९ कियाथा। फरीसियोंने आपुसमें कहा तुम देखतेहो कि तुम्होंसे कुछ नहीं बनपड़ता देखो कि संसार उसके पीछे
२० होचला। और उनमें जो पर्ब्बमें भजनको आयेथे
२१ कितने यूनानीथे। वे जलीली बैत्सैदाके फैलबूस पास आये और उसे बिनती किई कि हे महाशय हम चाहतेहैं कि ईसा
२२ को देखें। फैलबूसने आके अंद्रयासको कहा और फेर अंद्रयास और फैलबूसने ईसाको संदेश दिया। तब
२३ ईसाने उत्तर देके कहा कि घड़ी आपऊंचीहै किमनुष्यका
२४ पुत्र महिमा पावे। मैं तुम्होंसे सत्य सत्य कहताहों कि जबलों गोहूं का दाना भूमिमें नगिरे और मरनजाय तो अकेला रहताहै परंतु यदि वुह मरे तो बऊतसा फल लाताहै।
२५ वुह जो अपने प्राणको प्यार करताहै उसको खोवेगा और वुह जो इस जगतमें अपने प्राणका बैरीहै उसे अनंत जीवन
२६ लों रक्खेगा। यदि कोई मेरी सेवा करे चाहिये कि मेरे पीछे चलाआवे और जहां मैंहों तहां मेरा सेवकभी होगा यदि
२७ कोई मेरी सेवा करे मेरा पिता उसकी प्रतिष्ठा करेगा। अब मेरा प्राण व्याकुलहै और मैं क्या कहों कि हे पिता मुझे इस घड़ीसे छुड़ा परंतु मैं तो इसीलिये इस घड़ीलों आयाहों।
२८ हे पिता अपने नामको महिमा कर वहीं आकाशबाणी ऊई
२९ कि मैंने महिमा कियाहै और फेर महिमा करोंगा। तब लोगोंने जो आसपास खड़ेथे यह सुनके कहा मेघ गरजा औरों
३० ने कहा कि दूतने उसे बार्त्ता किई। ईसाने उत्तर देके कहा

यह शब्द मेरे कारण नहीं आया परंतु तुम्हारे लिये आया।
३१ अब इस जगतका बिचारहै अब इस जगतका राजा दूर
३२ कियाजायगा। और मैं यदि भूमिसे ऊपर उठायाजाऊं सब
३३ को अपने ओर खींचेंगा। उसने यह कहिके बता दिया कि
३४ मैं किस मृत्युसे मरने परहों। लोगोंने उत्तर देके उसे कहा
हमने ब्यवस्थामेंसे सुनाहै कि मसीह नित रहताहै फेर तू
क्योंकर कहताहै कि मनुष्यका पुत्र अवश्यहै कि उठायाजावे
३५ यह मनुष्यका पुत्र कौनहै। तब ईसाने उन्हें कहा कि उंजियाला
अभी थोड़ेलों तुम्हारे संगहै और जबलों उंजियाला तुम्हारे
संगहै तबलों चलो नहो कि अंधियारा तुमपर आपड़े और
वुह जो अंधियारेमें चलताहै नहीं जानता कि वुह किधर
३६ जाताहै। जबलों उंजियाला तुम्हारे संगहै उंजियालेपर
बिश्वास करो कि तुम उंजियालेके पुत्र होओ ईसाने ये बातें
कहीं और जाके अपनेको उनसे छिपाया।
३७ परंतु यद्यपि उसने उनके सन्मुख इतने आश्चर्य दिखाये तथापि
३८ वे उसपर बिश्वास नलाये। जिसतें अशीया आगमज्ञानीका
बचन जो उसने कहाथा पूराहोवे कि हे प्रभु हमारे समाचार
पर किसने प्रतीति किईहै और प्रभुका हाथ किसपर प्रगट
३९ ऊआहै। इसलिये वे बिश्वास नलासके कि अशीयाने फेर
४० कहा। उसने उनकी आंखें अंधी कियीं और उनके अंतःकरण
कठोर कियेहैं नहोवे कि आंखोंसे देखें और अंतःकरणसे
४१ समझें और फिरजायें और मैं उन्हें चंगा करों। जब अशीया
ने उसका ऐश्वर्य देखा तब ये बातें उसके बिषयमें कहीं।
४२ तिसपरभी प्रधानोंमेंसेभी बऊतेरे उसपर बिश्वास
लाये परंतु फरीसियोंके कारण उन्होंने मान नलिया नहो
४३ कि वे मंडलीसे निकालेजायें। क्योंकि वे लोगोंके आदरको
स्तुतिको ईश्वरके आदरसे अधिक चाहतेथे।
४४ ईसाने पुकारा और कहा वुह जो मुझपर बिश्वास लाताहै

मुझपर नहीं परंतु उसपर जिसने मुझे भेजा बिश्वास लाताहै।
४५ और वुह जो मुझे देखताहै उसको जिसने मुझे भेजा
४६ देखताहै। मैं जगतमें उंजियाला आयाहों कि जोकोई मुझ
४७ पर बिश्वास लावे अंधियारमें नरहे। और यदि कोई मनुष्य
मेरा बचन सुने और बिश्वास नकरे मैं उसका बिचार नहीं
करता क्योंकि मैं जगतको दोषी करनेको नहीं आया परंतु
४८ इसलिये कि जगतका उद्धार करों। जोकोई मेरी निंदा
करताहै और मेरे बचनको नहीं मानता एकहै जो उसे दोषी
करताहै जो बचन मैंने कहाहै वही पिछले दिनमें उसे दोषी
४९ ठहरावेगा। क्योंकि मैंने तो आपसे नहीं कहा परंतु पिताने
जिसने मुझे भेजा मुझे आज्ञा किई कि मैं क्या बोलों और क्या
५० कहों। और मैं जानताहों कि उसकी आज्ञा अनंत जीवनहै
सो जोकुछ मैं कहताहों जिस रीतिसे पिताने मुझे कहा उसी
रीतिसे मैं कहताहों।

१३ तेरहवां पर्ब्ब

१ अब बीतजानेके पर्ब्बसे आगे ईसाने जाना कि मेरा समय
आपहुंचाहै कि इस जगतसे पिताके पास जाऊं सो जैसा
वुह अपनोंको जो जगतमेंथे आगे प्यार करताथा वैसही
२ उसने अंत्यलों उस प्यारको निबाह दिया। और जब बिआरी
करचुके शैतानने शमऊनके पुत्र यहूदा अस्करयूतीके मनमें
३ डाला कि उसे पकड़वावे। ईसा यह जानकर कि पिताने
सब कुछ मेरे हाथोंमें दिया और कि मैं ईश्वरसे आया
४ और ईश्वरके पास जाताहों। उसने बिआरीसे उठकर
अपने बस्त्रको उताररक्खा और एक अंगोछा लेके अपनी
५ कटिमें बांधा। उसके पीछे उसने एक पात्रमें जल डाला और
शिष्यनके पांव धोनेलगा और उस अंगोछेसे जो बंधाथा
६ पोछनेलगा। तब वुह शमऊन पतरसके पास आया जिसने

७ उसे कहा हे प्रभु तू मेरा पांव धोताहै। ईसाने उत्तर देके उसे कहा वुह जो मैं करताहों तू अब नहीं जानता परंतु
८ इसके पीछे जानेगा। पतरसने उसे कहा तू मेरा पांव कधी नधोना ईसाने उसको उत्तर दिया यदि मैं तुझे नधोओं मेरे
९ संग तेरा भाग नहोगा। शमऊन पतरसने उसे कहा कि हे
१० प्रभु केवल मेरे पांव नहीं परंतु हाथ और सिरभी। ईसाने उसे कहा वुह जो धोयागयाहै केवल पांव धोनेका अवकाश नहीं रखता परंतु संपूर्ण पविन्नहै और तुम पविन्नहो परंतु
११ सब नहीं। क्योंकि वुह जानताथा कि कौन उसे पकड़वायेगा
१२ इसी लिये उसने कहा कि तुमसब पवित्र नहींहो। जब वुह उनका पांव धोचुका और अपने बस्त्रको लिया फेर बैठके
१३ उन्हें कहा कि तुम जानतेहो मैंने तुम्हांसे क्या किया। तुम मुझे गुरु और प्रभु कहतेहो और तुम ठीक कहतेहो क्योंकि
१४ मैंहों। सो जब कि मैं प्रभु और गुरुने तुम्हारे पांव धोये
१५ तुम्हेंभी उचितहै कि एक दूसरेके पांव धोओ। इसलिये कि मैंने तुम्हें एक दृष्टांत दिया कि जैसा मैंने तुम्हांसे किया तुम
१६ भी करो। मैं तुम्हांसे सत्य सत्य कहताहों कि सेवक अपने खामीसे बड़ा नहीं नवुह जो भेजागयाहै अपने भेजनेवालेसे
१७ बड़ाहै। यदि तुम ये बातें समझतेहो और उन्हें पालन
१८ करतेहो तो धन्यहो। मैं तुमसभोंके बिषयमें नहीं कहता मैं जानताहों जिन्हें मैंने चुनाहै परंतु इसलिये कि लिखाहुआ पूरा होवे कि उसने जो मेरे संग भोजन करताहै
१९ मुझपर अपना लात उठायाहै। अब मैं तुम्हें आगेसे कहताहों कि जब यह पूरा होजावे तुम प्रतीति करियो कि मैंवोंहों।
२० मैं तुम्हांसे सत्य सत्य कहताहों वुह जो उसको जिसे मैं भेजताहों ग्रहण करताहै मुझे ग्रहण करताहै और वुह जो मुझे ग्रहण करताहै उसे जिसने मुझेभेजा ग्रहण करताहै।
२१ ईसा यों कहिके मनमें व्याकुल हुआ और साक्षीदेके बोला मैं

तुम्हांसे सत्य सत्य कहताहों कि एक तुममेंसे मुझे पकड़वावेगा।
२२ तब शिष्यनने एक दूसरेको देख देख संदेह किया कि उसने
२३ किसके बिषयमें कहा। अब उसके शिष्यनमेंसे एक जो ईसाकी
२४ छाती पर लेटाथा जिसे ईसा प्यार करताथा। तब शमऊन
पतरसने उसको सैन किया कि पूछे वुह कौनहै जिसके बिषय
२५ में उसने कहा। तब उसने ईसाकी छाती पर गिरके उसे
२६ कहा हे प्रभु वुह कौनहै। ईसाने उत्तर दिया जिसको मैं
ग्रास भिगाके देताहों वहीहै तब उसने ग्रास भिगाके शमऊन
२७ के पुत्र यहूदा अस्करयूतीको दिया। और उस ग्रासके पीछे
शयतान उसमें पैठा तब ईसाने उसे कहा जोकुछ कि तू
२८ करताहै झटसे कर। और उनमें जो खाने बैठेथे किसीने
२९ नजाना कि उसने क्या समझके उसको यह कहा। क्योंकि
कितने समझतेथे कि यह इसलियेहै कि डोंड़ा यहूदाके पास
था कि ईसाने उसे यह कहा जो हमें पर्व्वके लिये आवश्यकहै
३० मोल ले अथवा कि वुह कंगालोंको कुछ देवे। तब ग्रास
३१ पाके तुरंत बाहर गया और रातथी। जब वुह चलागया
ईसाने कहा कि अब मनुष्यके पुत्रने महिमा पाया और उसमें
३२ ईश्वरने महिमा पाया। यदि ईश्वर उसमें महिमा पावे तो
ईश्वर उसकोभी अपनेसे महिमा देगा और उसे शीघ्र महिमा
३३ देगा। हे छोटे बालक अब थोड़ी देर मैं तुम्हारे संगहों तुम
मुझे ढूंढोगे और जैसा कि मैंने यहूदियोंसे कहा जिधर मैं
जाताहों तुम आ नहींसक्ते वैसा अब मैं तुम्हेंभी कहताहों।
३४ मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देताहों कि तुम एक दूसरेको प्यार
करो जैसा मैंने तुम्हें प्यार किया तुमभी एक दूसरेको प्यार
३५ करो। इस्से सब जानेंगे कि तुम मेरे शिष्यहो यदि तुम
३६ आपुसमें प्रेम रक्खो। शमऊन पतरसने उसे
कहा हे प्रभु तू किधर जाताहै ईसाने उसको उत्तर दिया
जिधर मैं जाताहों तू अब मेरे पीछे आ नहींसक्ता परंतु

३७ आगेको मेरे पीछे आवेगा। पतरसने उसे कहा प्रभु मैं तेरे पीछे अब क्यों नहीं आसक्ता मैं तेरे लिये अपना प्राण
३८ देउंगा। ईसाने उसे उत्तर दिया क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा मैं तुझे सच सच कहताहों कि कुक्कुट शब्द न करेगा जबलों तू तीनबार मुझे नमुकरे।

१४ चौदहवां पर्ब्ब

१ व्याकुल मतहोओ तुम ईश्वर पर बिश्वास रखतेहो मुझपर
२ भी बिश्वास रक्खो। मेरे पिताके घरमें बज़तसे सदनहैं नहीं तो मैं तुम्हें कहता मैं जाताहों कि तुम्हारे लिये स्थान ठीक
३ करों। और यदि मैं जाके तुम्हारे लिये सदन ठीक करों मैं फेर आओंगा और तुम्हें अपने संग लेउंगा कि जहां मैंहों
४ तुमभी होओ। और जिधर मैं जाताहों तुम जानतेहो और
५ मार्गभी जानतेहो। तूमाने उसे कहा हे प्रभु हम नहीं जानते तू कहां जाताहै और हम उस मार्गको क्योंकर
६ जानसकें। ईसाने उसे कहा मार्ग और सत्य और जीवन मैंहों मुझ बिना पिताके पास कोई
७ नहीं आसक्ता। यदि तुम मुझे जानते तो मेरे पिताकोभी जानते और अबसे तुम उसे जानतेहो और उसे देखाहै।
८ फैलबूसने उसे कहा हे प्रभु पिताको हमें दिखा कि हम तृप्त
९ होवें। ईसाने उसे कहा हे फैलबूस क्या इतने दिनसे मैं तुम्हारे संगहों और तूने अबलों मुझे नजाना जिसने मुझे देखाहै पिताको देखाहै और तू कैसे कहताहै कि पिताको हमें
१० दिखा। क्या तू बिश्वास नहीं करता कि मैं पितामें और पिता मुझमेंहै ये बातें जो मैं तुम्हें कहताहों मैं आपसे नहीं कहता परंतु पिता जो मुझमें रहताहै वही ये कार्य करताहै।
११ मेरी बातको प्रतीति करो कि मैं पितामें और पिता मुझमेंहै
१२ नहीं तो उन कार्योंके लिये मेरी प्रतीति करो। मैं तुम्होंसे

सत्य सत्य कहताहों वुह जो मुभपर बिश्वास रखताहै ये कार्य्य जो मैं करताहों वुहभी करेगा और उनसे बड़ा करेगा
१३ क्योंकि मैं अपने पिताके पास जाताहों। और मेरे नामसे जोकुछ तुम मांगोगे मैं वही करोंगा जिसतें पिता पुत्रमें
१४ महिमा पावे। यदि तुम मेरे नामसे कुछ मांगोगे मैं करोंगा।
१५ यदि तुम मुझे प्यार करतेहो तो मेरी आज्ञा
१६ को धारण करो। और मैं अपने पितासे चाहोंगा और वुह तुम्हें दूसरा सुखदायक देगा जो सदा तुम्हारे संग रहेगा।
१७ अर्थात सच्चाईका आत्मा जिसे जगत ग्रहण नहीं करसक्ता क्योंकि उसको नहीं देखता और नउसे जानताहै परंतु तुम उसे जानतेहो क्योंकि वुह तुम्हारे संग रहताहै और तुम्होंमें
१८ होवेगा। मैं तुम्हें अनाथ नछोड़ोंगा मैं तुम्हारे पास आओंगा।
१९ अब थोड़ी देरहै कि जगत मुझे फेर नदेखेगा परंतु तुम मुझे देखतेहो और इसलिये कि मैं जीवताहों तुमभी जीओगे।
२० उस दिन तुम जानोगे कि मैं पितामें और तुम मुझमें और
२१ मैं तुम्होंमेंहों। जिस पास मेरी आज्ञाहैं और उन्हें धारण करताहै वही मुझे प्यार करताहै और वुह जो मुझे प्यार करताहै मेरे पिताका प्रिय होगा और मैं उसको प्यार
२२ करोंगा और अपनेको उसपर प्रगट करोंगा। यहूदाने वुह नहीं जो अस्करयूती था उसे कहा कि हे प्रभु यह कैसाहै कि तू आपको हमपर प्रगट करेगा और जगत पर नहीं।
२३ ईसाने उत्तर देके उसे कहा यदि कोई मुझे प्यार करे वुह मेरे बचनको धारण करेगा और मेरा पिता उसे प्यार करेगा और हम उस पास आवेंगे और उसके संग बास
२४ करेंगे। जो मुझे प्यार नहीं करता मेरे बचनको धारण नहीं करता और यह बचन जो तुम सुनतेहो मेरा नहीं
२५ परंतु पिताकाहै जिसने मुझे भेजा। मैंने ये बातें तुम्हारे संग
२६ होतेहुए तुमसे कहीं। परंतु वुह सुखदायक धर्मात्मा जिसे

पिता मेरे नामसे भेजेगा वुह तुम्हें सब बातें सिखावेगा और सब बातें जोकुछ कि मैंने तुम्हें कहींहैं तुम्हें चेतदिलावेगा।
२७ शांति तुम्हें छोड़जाताहों अपनी शांति मैं तुम्हें देताहों जिस रीतिसे जगत देताहै मैं तुम्हें नहीं देताहों अपने मनको
२८ व्याकुल मत होनेदो और भय मतकरो। तुमने सुनाहै कि मैंने तुमसे कहा मैं जाताहों और तुम्हारे पास फेर आओंगा यदि तुम मुझे प्यार करते तो मेरे इस कहनेसे कि मैं पिताके पास जाताहों आनंद होते क्योंकि मेरा पिता मुझे बड़ाहै।
२९ और अब मैंने तुम्हें उसके होनेसे आगे कहा कि जब वुह
३० होचुके तुम बिश्वास करो। इसके पीछे मैं तुमसे बहुत बातें नकरोंगा क्योंकि इस जगतका राजा आताहै और उसकी कोई बस्तु मुझमें नहीं परंतु जिसतें जगत जाने कि मैं पिताको प्यार करताहों जिस रीतिसे पिताने मुझे आज्ञा दिई वैसाही मैं करताहों उठो यहांसे चलें।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब

१ मैं दाखकी सच्ची लताहों और मेरा पिता मालीहै।
२ हरएक डाली जो मुझमें फल नहीं लाती वुह उसे अलग करताहै और हरएक जो फल लातीहै वुह उसे पावन
३ करताहै जिसतें वुह अधिक फल लावे। अब तुम बचनके
४ कारण जो मैंने तुम्हें कहाहै पवित्रहो। मुझमें मिले रहो और मैं तुम्होंमें जिस रीतिसे डाली आपसे फल नहीं लासक्ती परंतु जब वुह लतामें मिलीहो तुमभी ला नहींसक्ते परंतु
५ जबलों तुम मुझमें मिलेरहो। दाखकी लता मैंहों तुम डालियांहो वुह जो मुझमें मिला रहताहै और मैं उसमें वही बहुत फल लाताहै क्योंकि मुझसे अलग तुम कुछ नहीं
६ करसक्ते। यदि मनुष्य मुझमें मिला नरहे वुह डालीके समान फेंकागयाहै और मूझजाताहै और लोग उन्हें समेटतेहैं

७ और आगमें झोकतेहैं और वे जलतीहैं। यदि तुम मुझमें मिलेरहो और मेरी बातें तुम्हांमें होवें तुम जो चाहोगे मांगोगे
८ और तुम्हारे लिये होजायगा। मेरे पिताका महिमा उसीसेहै
९ कि तुम बज्जत फल लाओ और तुम मेरे शिष्य होओगे। जैसा मेरे पिताने मुझे प्यार कियाहै वैसाही मैंने तुम्हें प्यार कियाहै
१० तुम मेरे प्यारमें बनेरहो। यदि तुम मेरी आज्ञाको धारण करो तो मेरे प्यारमें स्थिर रहोगे जैसा मैंने अपने पिताकी
११ आज्ञाको धारण कियाहै और उसके प्रेममें बनाहों। मैंने ये बातें तुम्हें कहीं कि मेरा आनंद तुम्में धरारहे और तुम्हारा
१२ आनंद भरपूर होवे। मेरी यही आज्ञाहै कि जैसा मैंने तुम्हें
१३ प्यार कियाहै तुम एक दूसरेको प्यारकरो। कोई इस्से बड़ा प्यार नहीं करता कि अपना प्राण अपने मित्रोंके लिये देवे।
१४ यदि तुम मेरी आज्ञाओंको मानो तो मेरे मित्रहो।
१५ इसके पीछे मैं तुम्हें सेवक नकहोंगा क्योंकि सेवक नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करताहै परंतु मैंने तुम्हें मित्र कहाहै क्योंकि सब बातें जो मैंने अपने पितासे सुनीहैं मैंने तुम्हें
१६ बतलाईं। तुमने मुझे नहीं चुना परंतु मैंने तुम्हें चुनाहै और तुम्हें यों ठहरायाहै कि तुम जाओ और फल लाओ और तुम्हारा फल धरारहे कि जोकुछ तुम मेरा नाम लेके पितासे
१७ मांगो वुह तुम्हें देवे। ये बातें मैं तुम्हें आज्ञा करताहों कि
१८ तुम एक दूसरेको प्यार करो। यदि जगत तुमसे बैरकरे तुम
१९ जानतेहो कि उसने तुम्होंसे आगे मुझ्से बैर किया। यदि तुम जगतके होते तो जगत अपनेको प्यार करता पर इसलिये कि तुम जगतके नहीं परंतु मैंने तुम्हें जगतसे चुन लिया इस
२० कारण जगत तुमसे बैर करताहै। उस बचनको जो मैंने तुम्हें कहा चेतकरो कि सेवक अपने स्वामीसे बड़ा नहीं यदि उन्होंने मुझे सताया वे तुम्हेंभी सतावेंगे यदि उन्होंने मेरा बचन
२१ धारण कियाहै वे तुम्हाराभी धारण करेंगे। परंतु ये व्यवहार

वे मेरे नामके कारण तुम्हांसे करेंगे क्योंकि वे उसे जिसने मुझे
२२ भेजाहै नहीं जानते। यदि मैं आया नहोता और उन्हें न
कहता तो उनका पाप नहोता परंतु अब उनके पापका
२३ आड़ नहीं। वुह जो मुझे बैर करताहै मेरे पितासेभी बैर
२४ करताहै। यदि मैं उनमें वे कार्य जो किसी मनुष्यने नहीं
किये नकरता तो उनका कुछ पाप नहोता पर अब तो उन्हों
२५ ने मुझे और मेरे पिताको देखा और बैर कियाहै। परंतु
यह ऊआ कि वुह बचन जो उनकी व्यवस्थामें लिखाहै संपूर्ण
२६ होवे कि उन्होंने मुझसे अकारण बैर किया। परंतु जब वुह
सुखदायक आवे जिसको मैं तुम्हारे लिये पिताके ओरसे
भेजोंगा अर्थात सच्चाईका आत्मा जो पितासे निकलताहै वुह
२७ मेरे लिये साक्षी देगा। और तुमभी साक्षी देओगे क्योंकि
तुम आरंभसे मेरे संगहो।

१६ सोलहवां पर्ब्ब

१।२ मैंने ये बातें तुम्हें कहीं कि तुम ठोकर नखाओ। वे तुम्हें
मंडलियोंसे निकालदेंगे हां वुह समय जाताहै कि जोकोई
तुम्हें मारडाले समझेगा कि मैं ईश्वरकी सेवा करताहै।
३ और तुम्हांसे ऐसे ब्यवहार करेंगे इसलिये कि उन्होंने नपिता
४ को नमुझको जानाहै। और मैंने ये बातें तुम्हें कहीं कि जब
वुह समय आवे तुम चेतकरो कि मैंने उनको तुम्हें कहीं और
५ मैंने आरंभमें ये बातें नकहीं क्योंकि मैं तुम्हारे संगथा। और
अब जिसने मुझे भेजाहै उसके पास जाताहों और तुममें
६ कोई मुझसे नहीं पूछता कि तू कहां जाताहै। परंतु इसलिये
कि मैंने ये बातें तुम्हें कहीं तुम्हारा मन शोकसे भरगया।
७ तिसपरभी मैं तुम्हें सत्य कहताहों कि तुम्हारे लिये मेरा
जाना सफलहै क्योंकि यदि मैं नजाऊं तो सुखदायक तुम्हारे
पास न आवेगा परंतु यदि मैं जाउं मैं उसको तुम्हारे पास

८ भेजदेऊंगा। और जब वुह आवे तो जगतको पापसे और
९ धर्मसे और आज्ञासे दोषी करेगा। पापसे इसलिये कि वे मुझ
१० पर बिश्वास नलाये। धर्मसे इसलिये कि मैं अपने पिताके
११ पास जाताहों और तुम मुझे फेर नदेखोगे। आज्ञासे इसलिये
१२ कि इस जगतके राजा पर आज्ञा किईगईहै। तुम्हें कहनेको
अबभी मुझ पास बज्जतसी बातेहैं परंतु अब तुम उन्हें सहि
१३ नहींसक्ते। पर जब वुह सत्यका आत्मा आवे वुह तुम्हें सारी
सचाईमें चलावेगा क्योंकि वुह अपनी नकहेगा परंतु जो
कुछ वुह सुनेगा सो कहेगा और वुह तुम्हें आगेका भेद
१४ बतावेगा। वुह मेरी महिमा करेगा इसलिये कि वुह मेरे
१५ बस्तुनसे पावेगा और तुम्हें बतावेगा। पिताकी सारी बस्तें
मेरीहैं इसलिये मैंने कहा कि वुह मेरी बस्तुनसे लेगा और
१६ तुम्हें दिखावेगा। तनिक और तुम मुझे नदेखोगे और फेर
तनिक और फेर तुम मुझे देखोगे क्योंकि मैं पिताके पास
१७ जाताहों। तब उसके कितने शिष्यनने आपुसमें कहा यह
क्याहै जो वुह हमें कहताहै तनिक और तुम मुझे न
देखोगे और फेर तनिक और तुम मुझे देखोगे और यह
१८ इसलिये कि मैं पिताके पास जाताहों। फेर उन्होंने कहा यह
क्याहै जो वुह कहताहै कि तनिक और हम नहीं जानते वुह
१९ क्या कहताहै। अब ईसाने यह जाना कि वे चाहतेहैं कि
उसे पूछें उसने उन्हें कहा क्या तुम आपुसमें पूछतेहो जो मैंने
कहा कि तनिक और तुम मुझे नदेखोगे और फेर तनिक
२० और तुम मुझे देखोगे। मैं तुम्होंसे सत्य सत्य कहताहों कि तुम
रोओगे और बिलाप करोगे परंतु जगत आनंद करेगा और
तुम उदासीन होओगे परंतु तुम्हारी उदासीका फल आनंद
२१ होगा। जब स्त्रीको पीड़ लगतीहै वुह उदासीन होतीहै
इसलिये कि उसका समय पज्जंचाहै परंतु जोंहीं वुह बालक
जनी फेर उस आनंदसे कि जगतमें एक मनुष्य उत्पन्न ज्जआ

२२ उस पीड़ाको स्मरण नहीं करता। और अब तुम उदासीन हो परंतु मैं तुम्हें फेर देखोंगा और तुम्हारा मन आनंद करेगा और तुम्हारी आनंदता तुमसे कोई छीन नलेगा।
२३ और तुम उस दिन मुझे कुछ नपूछोगे मैं तुमसे सच सच कहताहों तुम मेरे नामसे जो कुछ पितासे मांगोगे वुह तुम्हें
२४ देगा। अबलों तुम्होंने मेरे नामसे कुछ नहीं मांगा मांगो और
२५ तुम पाओगे कि तुम्हारा आनंद संपूर्ण होवे। मैंने ये बातें तुम्हें दृष्टांतोंमें कहीं परंतु वुह समय आताहै जब मैं तुम्हें दृष्टांतोंमें फेर नकहोंगा पर मैं पिताके बिषयमें तुम्हें खोलके
२६ दिखाओंगा। उस दिन तुम मेरे नामसे मांगोगे और मैं तुम्हें नहीं कहता कि मैं तुम्हारे कारण पिताकी प्रार्थना
२७ करोंगा। क्योंकि पिता तो आपही तुम्हें प्यार करताहै इस कारण कि तुमने मुझे प्यार कियाहै और बिश्वास लायेहो कि
२८ मैं ईश्वरसे निकलाहों। मैं पितासे निकला और जगतमें आयाहों फेर जगतको छोड़ताहों और पिताके पास
२९ जाताहों। उसके शिष्यनने उसे कहा देख अब तू खोलके
३० कहताहै और दृष्टांत नहीं कहता। अब हमें निश्चयहै कि तू सब कुछ जानताहै और आधीन नहीं कि कोई तुझे
३१ पूछे इस्से हमें निश्चय हुआ कि तू ईश्वरसे निकलाहै। ईसाने
३२ उन्हें उत्तर दिया क्या तुम्हें अब निश्चय हुआ। देखो घड़ी आतीहै हां अब आईहै कि तुम्मेंसे हरएक छिन्नभिन्न होके अपना अपना मार्ग पकड़ेगा और मुझे अकेला छोड़ेगा
३३ तथापि मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे संगहै। मैंने ये बातें तुम्हें कहीं कि तुम मुझमें शांति पाओ जगतमें तुम दुख पाओगे परंतु निश्चिंत रहो मैंने जगतको जीताहै।

१७ सत्रहवां पर्व्व

१ ईसाने ये बातें कहीं और स्वर्गके ओर अपनी आंखें उठाके कहा हे पिता घड़ी पहुंचीहै अपने पुत्रको महिमा दे कि
२ तेरा पुत्रभी तुझे महिमा देवे। जैसा कि तूने उसे समस्त शरीरों पर पराक्रम दियाहै कि वुह उनसभोंको जिन्हें तूने
३ उसे दियाहै अनंत जीवन देवे। और अनंत जीवन यह है कि वे तुझको अकेला सच्चा ईश्वर जानें और ईसा मसीहको
४ जिसे तूने भेजाहै। मैंने पृथिवी पर तेरा महिमा प्रगट कियाहै मैंने उस कार्यको जो तूने मुझे करनेको दियाहै समाप्त
५ करचुका। और अब हे पिता तू मुझे अपने संग उस महिमा से जो मैं जगतके होनेसे आगे तेरे संग रखताथा महिमा दे।
६ मैंने तेरे नामको उनलोगों पर जिन्हें तूने जगतमेंसे मुझे दियाहै प्रगट कियाहै वे तेरे थे और तूने उन्हें मुझे दियाहै
७ और उन्होंने तेरे बचनको धारण कियाहै। अब उन्होंने जाना कि समस्त बस्तें जो तूने मुझे दिईहैं तेरे ओरसेहैं।
८ क्योंकि वे बातें जो तूने मुझे दिईहैं मैंने उन्हें दिईहैं और उन्होंने ग्रहण किया और निश्चय कियाहै कि मैं तुझसे निकला
९ और वे बिश्वास लायेहैं कि तूने मुझे भेजा। मैं उनके लिये प्रार्थना करताहों मैं जगतके लिये नहीं परंतु उनके लिये जिन्हें तूने मुझे दियाहै प्रार्थना करताहों क्योंकि वे तेरेहैं।
१० और मेरे सब तेरेहैं और तेरे मेरेहैं और मैं उनमें
११ ऐश्वर्यमानहों। मैं जगतमें आगे न रहोंगा परंतु ये जगतमेंहैं और मैं तेरे पास आताहों हे पवित्र पिता अपनेही नामसे उन्हें जिन्हें तूने मुझे दियाहै रक्षा कर कि वे हमारे समान
१२ एक होवें। जबलों मैं उनके संग जगतमेंथा मैं तेरे नामसे उनकी रक्षा करताथा जिन्हें तूने मुझे दिया मैंने उनकी रखवाली किई और उनमेंसे नाशके पुत्रको छोड़ कोई नष्ट
१३ नहुआ जिसतें ग्रंथ पूराहो। और अब मैं तेरे पास आताहों

और ये बातें जगतमें कहताहों कि मेरा आनंद उनमें संपूर्ण
१४ होवे। मैंने तेरा बचन उन्हें दियाहै और जगतने उनसे
विरोध कियाहै क्योंकि वे जगतके नहीं जैसा मैं जगतका
१५ नहींहों। मैं यह नहीं चाहता कि तू उन्हें जगतमेंसे उठाले
१६ परंतु यह कि तू उन्हें दुष्टसे बचाले। जैसा कि मैं जगत
१७ का नहींहों वे जगतके नहीं। उन्हें अपनी सचाईसे पवित्र
१८ कर तेरा बचन सचाईहै। जिस रीतिसे तूने जगतमें मुझे
१९ भेजाहै मैंनेभी उन्हें जगतमें भेजाहै। उनके कारण मैं अपने
२० को पवित्र करताहों जिसमें वेभी सचाईसे पवित्रहों। मैं
केवल उनके लिये नहीं परंतु उन्होंके लियेभी जो उनके
२१ बचनसे मुझपर बिश्वास लावेंगे प्रार्थना करताहों। जिसतें वे
सब एक होवें जैसा कि हे पिता तू मुझमें और मैं तुझमें वे
भी हम्में एक होवें जिसतें जगत बिश्वास लावे कि तूने मुझे
२२ भेजाहै। और वुह महिमा जो तूने मुझे दिया मैंने उन्हें
२३ दियाहै कि जिस रीतिसे हम एकहैं वे एकहोवें। मैं उनमें
और तू मुझमें कि वे एकलों पहुंचके संपूर्ण होवें और जिसतें
जगत जाने कि तूने मुझे भेजाहै और जिस रीतिसे मुझे प्यार
२४ किया उन्हेंभी प्यार कियाहै। हे पिता मैं चाहताहों कि
जिन्हें तूने मुझे दियाहै जहां मैं होओं वेभी मेरे संग होवें कि
वे मेरे महिमा पर जो तूने मुझे दियाहै दृष्टि करें क्योंकि तूने
२५ मुझपर जगतकी उत्पत्तिसे आगे प्रेम कियाहै। हे याथार्थ
पिता जगतने तुझे नहीं जाना परंतु मैंने तुझे जानाहै और
२६ उन्होंने जानाहै कि तूने मुझे भेजाहै। और मैंने तेरा नाम
उनपर प्रगट कियाहै और प्रगट करोंगा कि जिस प्रेमसे तूने
मुझपर प्रेम कियाहै वुह प्रेम उनमेंहो और मैं उनमेंहों।

१८ अठारहवां पर्ब्ब

१ ईसा ये बातें कहिके अपने शिष्यनके संग कदरूनके नालेके पार गया वहां एक बाटिकाथी उसमें वुह और उसके
२ शिष्यनने प्रवेश किया। और यहूदाभी जिसने उसे पकड़वाया वुह स्थान जानताथा क्योंकि ईसा बारंबार अपने शिष्यनके
३ संग वहां जायाकरताथा। तब यहूदा एक जथा और प्रधान याजकों और फरीसियोंसे प्यादे लेके पलीता और दीपकों
४ और हथियारोंके संग वहां आया। और जैसा कि ईसा सबकुछ जो उसपर होनेकोथा जानताथा बाहर निकलके
५ उन्हें कहा कि तुम किसको ढूंढ़तेहो। वे उत्तर देके बोले कि ईसा नासरीको ईसाने उन्हें कहा कि मैंहों उस समय
६ यहूदाभी जिसने उसे पकड़वाया उनके संग खड़ाथा। जोंहीं उसने उन्हें कहा कि मैंहों वे पीछे हटे और भूमिपर गिरपड़े।
७ तब उसने उनसे फेर पूछा कि तुम किसको ढूंढ़तेहो वे बोले
८ कि ईसा नासरीको। ईसाने उत्तर दिया मैंने तो तुम्हें कहा
९ कि मैंहों सो यदि तुम मुझे ढूंढ़तेहो इन्हें जानेदेउ। जिसतें उसका कहा ऊआ बचन जो उसने कहा पूराहो कि जिन्हें
१० तूने मुझे दियाहै मैंने उनमेंसे एकको नखोया। तब शमऊन पतरसने अपना खड्ग खींचा और प्रधान याजकके सेवक पर चलाया और उसका दहिना कान उड़ादिया उस सेवकका
११ नाम मलकूसथा। तब ईसाने पतरससे कहा कि अपना खड्ग काठीमें कर क्या वुह कटोरा जो मेरे पिताने मुझे दियाहै मैं
१२ नपीओं। तब जथा और सेनापति और यहूदियोंके प्यादोंने
१३ मिलके ईसाको पकड़ा और बांधा। और पहिले उसको अन्नासके पास लेगये क्योंकि वुह कायफाका ससुरथा जो
१४ उस बरसका प्रधान याजकथा। यह वही कयाफाथा जिसने यहूदियोंको मंत्र दिया कि लोगोंके लिये एक मनुष्यका मरना
१५ अवश्यकहै। तब शमऊन पतरस दूसरे शिष्यके

संग होके ईसाके पीछे होलिया वुह शिष्य प्रधान याजकका जानाऊआथा और ईसाके साथ प्रधान याजकके सदनमें
१६ गया। परंतु पतरस द्वार पर बाहर खड़ारहा तब वुह दूसरा शिष्य जो प्रधान याजकका जानाऊआथा बाहर गया
१७ और द्वारपालीको कहिके पतरसको भीतर लेआया। तब उस दासीने जो द्वारपालीथी पतरसको कहा क्या तूभी इस
१८ मनुष्यके शिष्यनमेंसे नहीं वुह बोला कि मैं नहींहों। और सेवक और प्यादे कोइलोंको आग सुलगाकर जाड़ेके कारणसे खड़ेऊए तापतेथे और पतरस उनके संग खड़ा तापरहाथा।
१९ तब प्रधान याजकने ईसासे उसके शिष्यनके और उसके
२० उपदेशके बिषयमें पूछा। ईसाने उसको उत्तर दिया मैंने जगतको खोलके कहा मैंने सदा मंडलीमें और मंदिरमें जहां यहूदी नित्य एकठ्ठे होतेथे उपदेश किया और छिपके मैंने
२१ कुछ नकहा। तू मुझे क्यों पूछताहै जिन्होंने मुझे सुना उनसे पूछ कि मैंने उन्हें क्या कहा देख वे जानतेहैं जो मैंने कहा।
२२ जब उसने यों कहा प्यादोंमेंसे एकने जो पास खड़ाथा ईसा को थपेड़ा मारके कहा कि तू प्रधान याजकको ऐसा उत्तर
२३ देताहै। ईसाने उसको उत्तर दिया कि यदि मैंने बुरा कहा तो बुराईको साक्षीदे परंतु यदि अच्छा तो तू मुझे क्यों
२४ मारताहै। और अन्नासने उसे बांधाऊआ कयाफा प्रधान
२५ याजकके पास भेजा। और शमऊन पतरस खड़ाऊआ ताप रहाथा सो उन्होंने उसको कहा क्या तूभी उसके शिष्यनमें
२६ सेहै वुह मुकरगया और बोला कि मैं नहींहों। प्रधान याजकके सेवकोंमेंसे एकने कहा जो उसका कुटुम्ब था जिसका पतरसने कान काटाथा क्या मैंने तुझे उसके संग बाटिकामें
२७ नहीं देखा। तब पतरस फेर मुकरगया और वहीं कुक्कुटने
२८ शब्द किया। तब वे ईसाको कयाफाके पाससे बिचारस्थानमें लाये और भोर था और वे आप बिचारस्थान

में नगये कि अपवित्र नहो परंतु जिसतें वे बीतजानेका बलि
२९ खाय। तब पिलातूस उनके पास निकल आया और बोला
३० कि तुम इस मनुष्य पर क्या दोष लगातेहो। उन्होंने उत्तर
देके कहा यदि यह अपराधी नहोता तो हम उसको तेरे
३१ पास नसौंपते। पिलातूसने उन्हें कहा कि तुम उसे लेजाओ
और अपनी व्यवस्थाकी रीति पर उसका न्याय करो तब
यहूदियोंने उसे कहा कि हमको यह उचित नहीं कि किसी
३२ को बधन करें। यह इसलिये हुआ कि ईसाका वचन जो
उसने कहाथा संपूर्ण होवे कि वुह किस रीतिसे मरेगा।
३३ तब पिलातूस बिचारस्थानमें फेर गया और ईसाको बुलाके
३४ कहा क्या तू यहूदियोंका राजाहै। तब ईसाने उसको उत्तर
दिया क्या तू यह बात आपसे कहताहै अथवा कि औरोंने
३५ मेरे विषयमें तुझे कहो। पिलातूसने उत्तर दिया क्या मैं
यहूदीहों तेरेही लोगोंने और प्रधान याजकोंने तुझको मुझे
३६ सौंपदिया तूने क्या कियाहै। ईसाने उत्तर दिया कि मेरा
राज्य इस जगतका नहींहै यदि मेरा राज्य इस जगतका
होता तो मेरे सेवक लड़ते कि मैं यहूदियोंको सौंपा नजाता
३७ पर मेरा राज्य तो यहांका नहीं। तब पिलातूसने उसे कहा
क्या तू राजाहै ईसाने उत्तर दिया तूही कहताहै मैं राजा
हों मैं इसी लिये उत्पन्न हुआ और इसी कारण मैं जगतमें
आया कि सच्चाईपर साक्षी देउं जोकोई कि सत्यकेहै मेरा
३८ शब्द सुनताहै। पिलातूसने उसे कहा कि सच्चाई क्याहै और
वुह यह कहिके फेर यहूदियोंके पास गया और उन्हें बोला
३९ कि मैं उसका कुछ दोष नहीं पाता। परंतु तुम्हारा एक
व्यवहारहै कि मैं तुम्हारे लिये बीतजानेके पर्व्वमें एकको छोड़
देउं क्या तुम चाहतेहो कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियोंके राजा
४० को छोड़देउं। तब उन सभोंने फेर चिल्लाके कहा कि इस
मनुष्यको नहीं परंतु बरब्बासको और बरब्बास बटमारथा।

१९ उन्नीसवां पर्व्व

१। २ तब पिलातूसने ईसाको कोड़े मारे। और योधालोगोंने कांटोंका मुकुट गूंथके उसके सिर पर रक्खा और उसे लाल ३ बस्त्र पहिनाके कहा। कि यहूदियोंके राजा प्रणाम और ४ उन्होंने उसको थपेड़े मारे। तब पिलातूसने फेर बाहर जाके उन्हें कहा कि देखो मैं उसको तुम्हारे पास बाहर लाताहों ५ जिसतें तुम जानो कि मैं उसका कुछ दोष नहीं पाता। तब ईसा कांठोंका मुकुट रखे और लाल बस्त्र पहिनेऊए बाहर आया और पिलातूसने उन्हें कहा कि इस मनुष्यको देखो। ६ जब प्रधान याजकों और प्यादोंने उसे देखा वे चिल्लाके बोले कि क्रूसपर मार क्रूस पर मार पिलातूसने उन्हें कहा तुम उसे लेओ और क्रूस पर मारो क्योंकि मैं उसका कुछ दोष ७ नहीं पाता। यहूदियोंने उसे उत्तर दिया कि हम ब्यवस्था रखतेहैं और हमारी ब्यवस्थाकी रीतिसे वुह मारडालनेके योग्यहै इसलिये कि उसने अपनेको ईश्वरका पुत्र ठहराया। ८ जब पिलातूसने यह बचन सुना वुह अधिक ९ डरगया। और बिचारस्थानमें फेर प्रवेश करके ईसासे कहा १० तू कहांकाहै परंतु ईसाने उसे कुछ उत्तर नदिया। तब पिलातूसने उसे कहा कि तू मुझसे नहीं बोलता क्या तू नहीं जानता कि मैं पराक्रम रखताहों चाहों तुझे क्रूस पर मारों ११ और चाहों तुझे छोड़देउं। ईसाने उत्तर दिया कि यदि यह तुझे ऊपरसे दिया नजाता तो मुझपर तेरा कुछ पराक्रम नहोता इसलिये जिसने मुझे तुझको सौंपदिया उसका अधिक १२ पापहै। उस समयसे पिलातूसने चाहा कि उसे छोड़देय पर यहूदियोंने चिल्लाके कहा कि यदि तू इस मनुष्यको छोड़े तो तू कैसरका मित्र नहीं जोकोई अपनेको राजा ठहराताहै १३ कैसरसे बिरुद्ध कहताहै। पिलातूस यह बात सुनकर ईसाको बाहर लाया और बिचारके आसन पर

बैठा उस स्थानमें जो चबूतरा कहावताहै परंतु इब्री भाषा
१४ में गब्बाताहै। और यह बीतजानेके सिद्ध करनेका समय
और छठवीं घड़ीके निकटथा और उसने यहूदियोंको कहा
१५ कि अपने राजाको देखो। तब वे चिल्लाये कि लेजा लेजा उसे
क्रूस पर मार पिलातूसने कहा कि मैं तुम्हारे राजाको क्रूस
पर मारों प्रधान याजकोंने उत्तर दिया कि कैसरको छोड़
१६ हमारा कोई राजा नहीं। तब उसने उसको उन्हें सौंपदिया
कि क्रूस पर माराजाय और उन्होंने ईसाको पकड़ा और
१७ लेगये। तब वुह अपना क्रूस उठायेहुए उस स्थानको गया
जो खोपड़ीका कहावताहै जिसका अर्थ इब्रीमें गलगताहै।
१८ वहां उन्होंने उसे और उसके संग और दोको इधर उधर
एक क्रूस पर मारा और ईसाको बीचमें।
१९ और पिलातूसने एक नामपत्र लिखके क्रूस पर लगादिया
वुह लिखाहुआ यहथा कि ईसा नासरी यहूदियोंका राजा।
२० इस नामपत्रको बहुतेरे यहूदियोंने पढ़ा क्योंकि वुह स्थान
जहां ईसा क्रूस पर खींचागयाथा नगरके निकटथा और
२१ वुह इब्री और यूनानी और लातीनीमें लिखाथा। तब
यहूदियोंके प्रधान याजकोंने पिलातूसको कहा कि यहूदियों
का राजा मत लिख परंतु कि उसने कहा कि मैं यहूदियोंका
२२ राजाहों। पिलातूसने उत्तर दिया कि मैंने जो लिखा सो
२३ लिखा। फेर जब योधाओंने ईसाको क्रूस
पर टांगा उसके बस्त्रोंको लिया और चार भाग किये हर
योधाको एक और उसके बागाकोभी लिया और बागा
२४ बिनसीआ ऊपरसे नीचेलों बुनाहुआथा। इसलिये वे
आपुसमें बोले कि हम उसे नफाड़ें परंतु उसपर चिट्ठीडालें
कि यह किसे पहुंचताहै यह इसलिये हुआ जिसतें ग्रंथ जो
कहताहै कि उन्होंने मेरा बस्त्रको बांटलिया और मेरे बागेके
लिये चिट्ठीडाली संपूर्णहो सो योधाओंने ऐसाही किया।

२५ तब ईसाके क्रूसके पास उसकी माता और उसकी
मातकी बहिन क्लेओपासकी मरियम और मरियम मजदलियः
२६ खड़ीथीं। ईसाने अपनी माताको और उस शिष्यको जिसे
वुह प्यार करताथा समीप खड़ेहुए देखकर अपनी माताको
२७ कहा कि हे स्त्री यह तेरा पुत्र। फेर उसने उस शिष्यको
कहा यह तेरी माता और उस घड़ीसे वुह शिष्य उसे अपने
२८ घर लेगया। इसके पीछे ईसाने जाना कि अब सब
बातें समाप्त हुईं जिसतें ग्रंथ संपूर्ण होवे उसने कहा कि मैं
२९ प्यासाहों। अब वहां एक लोटा सिरकेसे भराहुआ धराथा
उन्होंने बादलके टुकड़ेको सिरकामें भिगाके ज़ूफामें लपेटके नल
३० पर रक्खा और उसके मुंहमें दिया। फेर ईसाने जब सिरका
चीखा तो कहा कि संपूर्ण हुआ और सिर झुकाके प्राण सौंप
३१ दिया। तब इसलिये कि वुह बनाउरीका समयथा यहूदियों
ने पिलातूससे चाहा कि उनकी टांगें तोड़ें और उतार
लेजांये कि लोथ बिश्रामके दिनमें क्रूस पर नरहिजायं क्योंकि
३२ वुह बड़ा बिश्रामका दिनथा। तब योधाओंने आके पहिले
और दूसरेकी टांगें तोड़ीं जो उसके साथ क्रूस पर खींचे
३३ गयेथे। परंतु जब उन्होंने ईसाके पास आके देखा कि वुह
३४ मरचुकाहै उन्होंने उसकी टांगें नतोड़ीं। परंतु योधाओंमेंसे
एकने भालेसे उसका पंजर छेदा और तुरंत उसे लोहू
३५ और पानी निकला। और जिसने यह देखा साक्षी दिई
और उसकी साक्षी सत्यहै और वुह जानताहै कि सत्य
३६ कहताहै जिसतें तुम बिश्वास लाओ। इसलिये ये बातें प्रगट
हुईं कि लिखाहुआ संपूर्ण होवे कि उसकी कोई हड्डी तोड़ी
३७ नजायगी। और फेर दूसरा ग्रंथ कहताहै कि वे उसपर
३८ जिसको उन्होंने छेदा दृष्टि करेंगे। और इसके पीछे
अरिमतियाके यूसफने जो ईसाका शिष्यथा परंतु यहूदियोंके
डरसे छिपके शिष्याई करताथा पिलातूससे चाहा कि ईसाकी

लोथको लेजाय पिलातूसने लेनेदिया सो वुह आया और
३९ ईसाकी लोथको लिया। और नीकूदीमूसभी जो पहिले
ईसाके पास रातको गयाथा आया और पचास सेर गंधरस
४० और एलुआ मिलाके लाया। तब उन्होंने ईसाकी लोथको
लेके सूती कपड़ेमें सुगंधके संग लपेटा जैसा कि यहूदियोंके
४१ गाड़नेकी रीतिहै। और वहां जिस स्थानमें उसे क्रूसपर
खींचाथा एक बाटिकाथी उस बाटिकामें एक नई समाधि
४२ थी जिसमें कोई धरा नगयाथा। सो उन्होंने ईसाको
यहूदियोंकी बनाउरीके लिये वहीं रक्खा क्योंकि वुह समाधि
निकटथी।

२० बीसवां पर्ब्ब

१ अठवारेके आरंभमें मरियम मग्दलयः तड़के ऐसा कि
अबलों अंधियाराथा समाधि पर आई और पत्थरको
२ समाधिसे टालाऊआ देखा। तब वुह शमऊन पतरस और
उस दूसरे शिष्यके पास जिसे ईसा प्यार करताथा दौड़ी
आई और उन्हें बोली कि कोई प्रभुको समाधिमेंसे लेगये
३ और हम नहीं जानते कि उन्होंने उसको कहां रक्खा। फेर
पतरस दूसरे शिष्यके संग होके निकला और समाधिके
४ ओर आनेलगा। सो वे दोनों एकळे दौड़े परंतु दूसरा शिष्य
पतरससे आगे बढ़गया और समाधि पर पहिले पऊंचा।
५ उसने झुकके सूती कपड़े पड़े देखे पर वुह भीतर नगया।
६ फेर शमऊन पतरस उसके पीछे पऊंचा और समाधिके
७ भीतर पैठके सूती कपड़ोंको पड़ाऊआ देखा। और वुह
अंगोछा जिससे उसका सिर बंधाथा कपड़ेके संग नहीं परंतु
८ लपेटाऊआ एक स्थानमें अलग पड़ा देखा। तब दूसरा
शिष्यभी जो समाधि पर पहिले आयाथा भीतर गया और
९ देखके बिश्वास लाया। क्योंकि वे अबलों ग्रंथको नजानतेथे कि

१० वुह अवश्य मृतकोंमेंसे जीउठेगा। तब शिष्य अपने अपने घर
११ गये। परंतु मरियम समाधिके पास बाहर रोती
१२ खड़ीरही और रोतेऊए झुके समाधिमें झुकी। तो दो दूतों
को श्वेत बस्त्रमें एकको सिरहाने और दूसरेको पैतानेमें बैठे
१३ देखा जहां ईसाकी लोथ रक्खी गईथी। उन्होंने उसे कहा
हे स्त्री तू क्यों रोतीहै उसने कहा इसलिये कि वे मेरे प्रभुको
लेगये और मैं नहीं जानती कि उन्होंने उसे कहां रक्खा।
१४ और उसने यों कहिके पीछे फिरकर ईसाको खड़े देखा
१५ और नचीन्हा कि वुह ईसाहै। ईसाने उसे कहा हे स्त्री तू
क्यों रोतीहै किसे ढूंढ़तीहै उसने उसको माली जानके कहा
हे महाराज यदि तूने उसको यहांसे उठायाहो तो मुझे
कह कि तूने उसको कहां रक्खाहै और मैं उसे लेजाउंगी।
१६ ईसाने उसे कहा कि मरियम उसने फिरके उसे कहा रब्बूनी
१७ अर्थात हे गुरु। ईसाने उसे कहा मुझे मत छू क्योंकि मैं अब
लों अपने पिता पास ऊपर नहीं गया परंतु मेरे भाइयोंके
पास जा और उनसे कह कि मैं ऊपर अपने पिता और
तुम्हारे पिता और अपने ईश्वर और तुम्हारे ईश्वरके पास
१८ जाताहों। मरियम मजदलियःने आके शिष्यनसे कहा कि मैंने
प्रभुको देखा और उसने ये बातें मुझे कहीं।

१९ फेर उसी दिन जो अठवारेका पहिलाथा संध्याके समयमें
जब उस स्थानके द्वार जहां सब शिष्य एकट्ठेथे यहूदियोंके
डरसे बंदथे ईसा आया और मध्यमें खड़ा ऊआ और उन्हें
२० बोला कि तुमपर कुशल। और यों कहिके अपना हाथ
और पंजर उन्हें दिखाया तब शिष्य प्रभुको देखके आनंद
२१ ऊए। और ईसाने फेर उन्हें कहा कि तुमपर कुशल जिस
रीतिसे पिताने मुझे भेजाहै उसी रीतिसे मैं तुम्हें भेजताहों।
२२ उसने यह कहिके उनपर फूंका और कहा कि धर्मात्माको
२३ लेओ। जिनके पापोंको तुम क्षमा करो उनके क्षमा किये

जातेहैं और जिनके तुम क्षमा नकरो उनके धरेहैं।
२४ परंतु सूमा उन बारहमेंसे एक जिसको पदवी डिदिमस
२५ थी ईसाके आनेके समय उनके संग नथा। इसलिये और
शिष्यनने उसको कहा कि हमने प्रभुको देखाहै परंतु उसने
उन्हें कहा जबलों मैं उसके हाथोंमें कीलोंके चिह्न नदेखों
और कीलोंके चिह्नमें अपनी अंगुली नकरों और अपने हाथ
उसके पंजरमें नडालों मैं प्रतीति नकरोंगा।
२६ आठ दिनके पीछे जब उसके शिष्य भीतरथे और सूमा उनके
संगथा द्वार बंद होतेऊए ईसा आया और बीचमें खड़ाहोके
२७ बोला कि तुम्हांपर कुशल। फेर उसने सूमाको कहा कि
अपनी अंगुली इधर बढ़ा और मेरे हाथोंको देख और
अपना हाथ इधर बढ़ा और उसे मेरे पंजरमें कर और
२८ बिश्वासहीन मतहो परंतु बिश्वासीहो। सूमाने उत्तर देके
२९ उसे कहा हे मेरे प्रभु और हे मेरे परमेश्वर। ईसाने उसे
कहा हे सूमा इसलिये तू बिश्वास लायाहै कि तूने मुझे देखाहै
धन्य वेहैं जिन्होंने नहीं देखा और बिश्वास लायेहैं।
३० और बऊतेरे और लक्षण ईसाने निश्चय अपने शिष्यनके
३१ आगे किये जो इसपुस्तकमें नहीं लिखेहैं। परंतु ये लिखेगयेकि
तुम बिश्वास लाओ कि ईसा वुह मसीहहै ईश्वरका पुत्र और
कि तुम बिश्वास करतेऊए उसके नामसे अनंत जीवन पाओ।

२१ एकीसवां पर्व्व

१ और इन बातोंके पीछे ईसाने फेर अपनेको तिबीरियासके
समुद्रके पास शिष्यनको दिखाई दिया और इसरीतिसे प्रगट
२ ऊआ। कि शमऊन पतरस और सूमा जो डिदिमस
कहावताहै और नासानाईल जो कानाके जलीलकाहै और
ज़बदीके बेटे और उसके शिष्यनमेंसे और दो एकठेथे।
३ शमऊन पतरसने उन्हें कहा कि मैं मछली पकड़नेको जाताहों

उन्होंने कहा हमभी तेरे संग चलेंगे और निकलके तुरंत
४ नाव पर चढ़े और उस रात कुछ नपकड़ा। परंतु जब वोहान
हुआ ईसा तीर पर खड़ाथा परंतु शिष्यनने नजाना कि वुह
५ ईसाहै। तब ईसाने उन्हें कहा कि हे बालको तुम्हारे
पास कुछ भोजनहै उन्होंने उसे उत्तर दिया कि नहीं।
६ उसने कहा नावके दहिने ओर जाल डालो कि तुम पाओगे
सो उन्होंने डाला तब मछलियोंकी बहुताईसे वे उसे खींच
७ नसके। इसलिये उस शिष्यने जिसको ईसा प्यार करताथा
पतरसको कहा कि वुह प्रभुहै सो जब शमऊन पतरसने
सुना कि वुह प्रभुहै उसने अपने मछुएके बस्तको अपने पर
लपेटा क्योंकि वुह नंगाथा और अपनेको समुद्रमें डालदिया।
८ अरु और शिष्य नाव पर जालको मछलियां समेत खींचते
आये क्योंकि वे तीरसे दूर नथे परंतु जैसा कि दोसौ हाथके।
९ जेउं वे तीर पर आये उन्होंने वहां कोइलोंकी आग और
१० उसपर मछली रक्खीहुई और रोटी देखी। ईसाने उन्हें कहा
११ उन मछलियोंमेंसे जो तुम्होंने अभी पकड़ी लाओ। शमऊन
पतरसने जाके जालको एक सौ तिरपन बड़ी मछलियोंसे
भराहुआ खींचा यद्यपि इतनी बहुतथीं तथापि जाल
१२ नफटा। ईसाने उन्हें कहा आओ भोजन करें और शिष्यन
मेंसे किसीकी प्रतिज्ञा नहुई कि उसे पूछें कि तू कौनहै क्योंकि
१३ वे जानतेथे कि वुह प्रभुहै। तब ईसाने आके रोटी लिई
और उन्हें दिई और उसी रीतिसे मछलीभी दिई।
१४ यह तीसरे बारहै कि ईसाने जीउठकर आपको शिष्यन
१५ को दिखाया। और जब वे भोजन करचुके ईसाने शमऊन
पतरसको कहा हे यूनाके पुत्र शमऊन क्या तू मुझे इनसे
अधिक प्यार करताहै उसने उसे कहा हां हे प्रभु तू जानताहै
कि मैं तुझे प्यार करताहों उसने उसे कहा मेरे मेम्रोंको
१६ चरा। उसने दूसरे बार उसे फेर कहा कि हे यूनाके पुत्र

शमऊन क्या तू मुझे प्यार करताहै उसने उसे कहा कि हां हे प्रभु तू तो जानताहै कि मैं तुझे प्यार करताहों उसने उसे
१७ कहा कि मेरी भेड़ें चरा। उसने उसे तीसरे बार कहा कि हे यूनाके पुत्र शमऊन क्या तू मुझे प्यार करताहै तब पतरस उदासीन हुआ इसलिये कि उसने उसे तीसरे बार कहा कि तू मुझे प्यार करताहै तब उसने उसको कहा हे प्रभु तू तो सबकुछ जानताहै तू जानकारहै कि मैं तुझे प्यार करताहों
१८ ईसाने उसे कहा मेरी भेड़ें चरा। मैं तुझसे सत्य सत्य कहताहों जबलों तू तरुणथा तू अपनी कटि बांधताथा और जहां कहीं चाहताथा जाताथा परंतु जब तू वृद्ध होगा तू अपने हाथोंको फैलायेगा और दूसरा तेरी कटि बांधेगा और जहां तू
१९ नचाहे वहीं लेजायगा। उसने यह कहिके पतादिया कि वुह किस मृत्युसे ईश्वरका महिमा प्रगट करेगा और उसने यों
२० कहिके उसे कहा कि मेरे पीछे होले। तब पतरसने फिरके उस शिष्यको पीछे आते देखा जिसको ईसा प्यार करताथा जिसने बिआरीके समय उसकी छाती पर लेटके
२१ पूछा कि हे प्रभु वुह जो तुझे पकड़वाताहै कौनहै। पतरसने उसे देखके ईसासे कहा हे प्रभु इस मनुष्यका क्या होगा।
२२ ईसाने उसे कहा यदि मैं चाहों कि जबलों मैं आओं वुह
२३ यहीं ठहरे तो तुझे क्या तू मेरे पीछे चलाआ। तब भाइयोंमें यह बात फैलगई कि वुह शिष्य नमरेगा परंतु ईसाने उसे नहीं कहा कि वुह नमरेगा परंतु यह कहा कि यदि मैं चाहों
२४ कि मेरे आनेलों वुह ठहरे तो तुझे क्या। यह वुह शिष्यहै जिसने इन कार्योंकी साक्षी दिई और इन्हें लिखा और हमें
२५ निश्चयहै कि उसकी साक्षी सत्यहै। और भी बहुतसे कार्यहैं जो ईसाने किये कि यदि वे अलग अलग लिखेजाते तो मैं समुझताहों कि उन ग्रंथोंको जो लिखेजाते जगतमेंभी समाई नहोती आमीन।